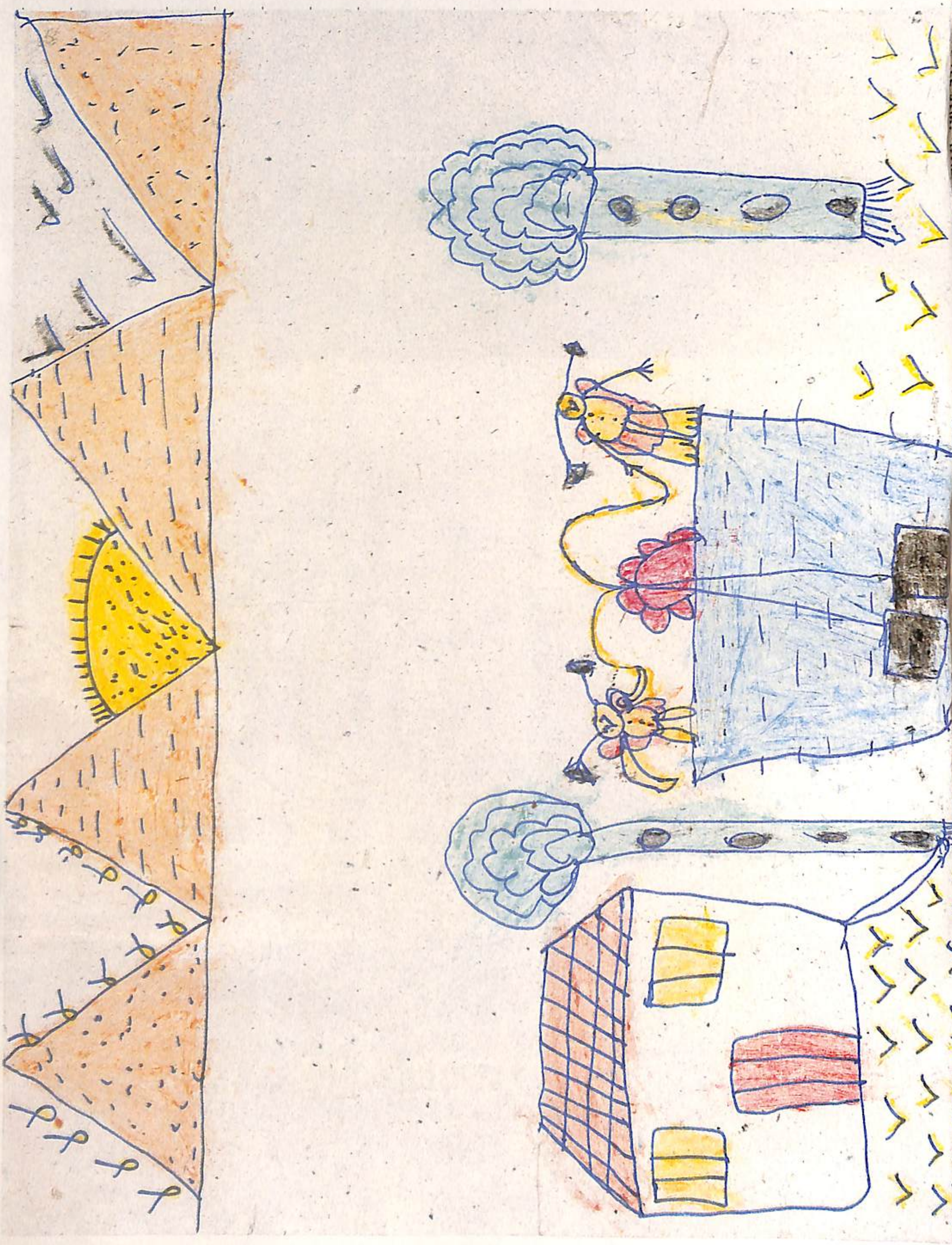
चकमक

जनवरी, 1992 बाल विज्ञान पत्रिका रू. 4.00



मेरा पन्ना अंक





आकांक्षा पचबिये, कांकेर, बस्तर

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-7 अंक-7 जनवरी, 1992

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मोहन श्रीवास्तव

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक ख़र्च मुफ़्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 563380

काग़ज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से। सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में

विशेष

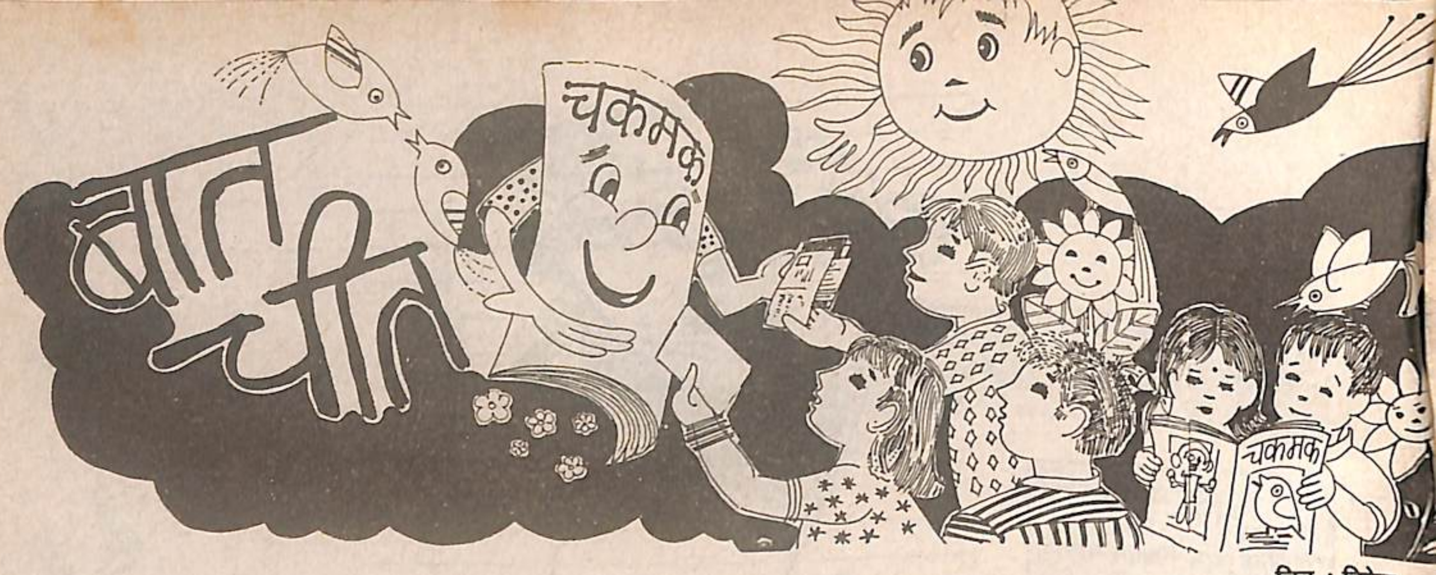
कविताएं

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण : पारुल, साढ़े पांच वर्ष, टीकमगढ़

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



चित्र : विवेक

इस अंक के बहाने ......

चकमक तुम्हारी अपनी पत्रिका है। पहले अंक से ही इसमें तुम्हारी रचनाओं को प्रमुखता से छापा गया है। समय-समय पर तुम्हारी रचनाओं पर आधारित अंक भी निकाले गए हैं, जैसे नवंबर 85; फरवरी, 86; जनवरी, 87 का *तुम्हारा अपना अंक* और जुलाई, 89 का *सृजन अंक*। पर इनमें प्रकाशित रचनाएं चकमक या चकमक की सहयोगी संस्थाओं द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के ज़रिए आई थीं। यह अंक भी तुम्हारी रचनाओं का है, पर इस माने में अलग है कि इसमें प्रकाशित अधिकांश रचनाएं चकमक की रोज़मर्रा की डाक में आने वाली सामग्री में से ही ली गई हैं, और कुछ एक बाल मेले से। इस अंक के बहाने दो-चार बातें और कहना चाहते हैं।

चकमक के अब तक पचहत्तर से अधिक अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस दौरान कई नए कालम शुरू हुए और कई बंद हो गए। पर दो ऐसे कालम भी रहे हैं जो नियमित रूप से बिना नागा हर अंक में प्रकाशित होते रहे हैं (केवल 'तुम्हारा अपना अंक' छोड़कर)। ये कालम हैं *माथापच्ची* और *मेरा पन्ना*। माथापच्ची पहेलियों का कालम है जबकि मेरा पन्ना बच्चों की लिखी रचनाओं और चित्रों का।

हमारे परिचित और चकमक के एक नियमित पाठक ने हमसे कहा, ''भई अब *मेरा पन्ना* बहुत छाप लिया, इसे बंद करो।''

> ‘जहां हमको कुछ नहीं दिखाई देता, वहां बालक को चमत्कार दिखाई देता है।’
>
> ❑ गिजुभाई

"बालक का सच्चा सुख सब कुछ स्वयं बालक को ही करने देने में है।"

❑ गिजुभाई

क्षण भर को तो हमें समझ ही नहीं आया कि वे क्या कह रहे हैं। जब समझे तो पूछा, ''क्यों?''

बोले, ''क्या हर अंक में वही घूम-फिरकर कि मैंने साइकिल चलाना सीखा, मैंने चिड़िया पाली, मैंने रोटी बनाना सीखा, फलां मेरा दोस्त, फलां मेरा दुश्मन आदि छापते रहते हैं!"

ख़ैर, हमने उनसे क्या कहा, वह सब यहां नहीं लिख रहे हैं, पर सच्ची बात तो यह है कि मेरा पन्ना के इन चार पेजों के बिना तो हम चकमक की कल्पना ही नहीं कर सकते।

देश में एकलव्य के अलावा और भी तमाम जाने-माने लोग एवं संस्थाएं हैं जो बच्चों के साथ अलग-अलग पहलुओं पर काम कर रही हैं। जब हमने 1989 में, चकमक में प्रकाशित बच्चों द्वारा लिखी गई कविताओं तथा कहानियों के संग्रह *प्यारा लड्डू* तथा *लोमड़ी और ज़मीन* निकाले, तो इनमें से कुछ की प्रतिक्रिया थी कि आप इन किताबों के लिए पाठक कहां से लाएंगे? बच्चे तो बच्चों का लिखा नहीं पढ़ते! उन्हें तो बड़ों का यानी वयस्कों का लिखा साहित्य चाहिए।

संभव है ये प्रतिक्रियाएं उनके अपने निजी अनुभव से उपजी हैं और कुछ हद तक सच भी हो सकती हैं। लेकिन हमारा अनुभव इससे अलग है। चकमक में बच्चे न केवल मेरा पन्ना चाव से पढ़ते हैं बल्कि उन रचनाओं से प्रेरित होकर ख़ुद भी लिखते हैं। हां, इन रचनाओं पर रोज़मर्रा की घटनाओं का विवरण मात्र होने का आरोप लगाया जा सकता है। लेकिन कल्पनाशील दृष्टिकोण रखने वाले ही यह समझ सकते हैं कि इन रचनाओं में कोरा यथार्थ है या उनकी अपनी कल्पना, रचनाशीलता का पुट भी! और यह समझ भी पचहत्तर अंकों के तीन सौ पृष्ठों पर बिखरी बीसियों रचनाओं और चित्रों को देखकर ही बनाई जा सकती है। ये रचनाएं केवल उनकी अभिव्यक्ति नहीं होतीं, बल्कि तमाम दुनिया से संवाद का एक तरीक़ा भी हैं।

मुद्दे की बात तो यह है कि चकमक को मात्र एक पत्रिका के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

सब जानते हैं कि एकलव्य पिछले कई वर्षों से बाल गतिविधियों में संलग्न है। गतिविधियां स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं। स्कूली काम माध्यमिक शालाओं में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण से शुरू हुआ था और अब वह विज्ञान के साथ-साथ सामाजिक अध्ययन व प्राथमिक शालाओं तक फैल गया है। इन सब प्रयासों का

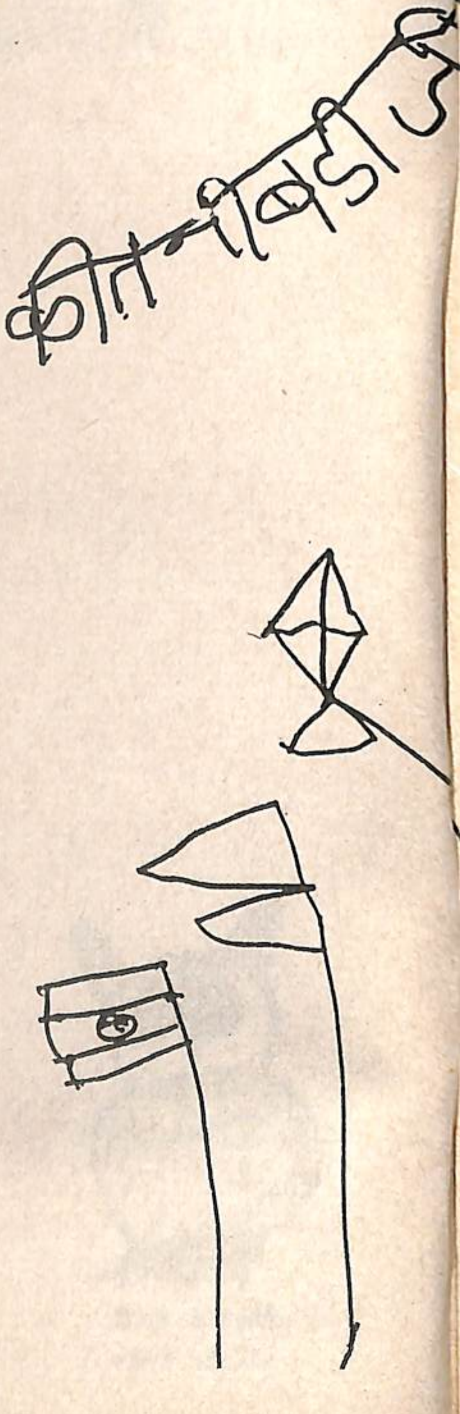

ओमप्रकाश, आठवीं, पालखंदा, उज्जैन

मुख्य उद्देश्य रहा है एक ऐसी शिक्षा का विकास करना, जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो। यह शिक्षा भी केवल किताबों पर निर्भर न हो, बल्कि वह खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

अपने काम के दौरान हमने यह पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को घर में या स्कूली समय से बाहर भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इसी मंशा से पिछले वर्षों में एकलव्य ने अपने कार्यक्षेत्रों में बाल-पुस्तकालय और चकमक क्लब बनाए हैं तथा कई बाल मेले आयोजित किए हैं। जहां पुस्तकालयों में बच्चे मोटी-मोटी पाठ्यपुस्तकों से निजात पाकर कुछ और पढ़ने की ललक पूरी कर पाते हैं, वहीं चकमक क्लब तथा बाल मेले उनकी सृजन क्षमता को सामने लाने का काम करते हैं। बच्चे मिट्टी, काग़ज़ और ठठेरों से खिलौने बनाते हैं, छोटे-छोटे प्रयोग करते हैं, फालतू और कबाड़ी चीज़ों से अपनी दुनिया रचते हैं, छोटे लेकिन दिलचस्प आविष्कार करते हैं। दूसरी तरफ एक ऐसा समूह भी होता है जो बाक़ी सब भूलकर काग़ज़ पर रंगों की दुनिया उतारने में मशगूल होता है, रंग भी मिट्टी, चाक, स्याही और फूल-पत्तियों से बनते हैं। और कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपने को लिखकर अभिव्यक्त करना चाहते हैं। अपनी यह अभिव्यक्ति वे औरों को भी बताना चाहते हैं। वास्तव में चकमक इन सबके लिए एक मंच है, जहां वे अपने को बिना किसी डर-झिझक के अभिव्यक्त करते हैं।

शहरों और बड़े कस्बों में क्लब तथा सांस्कृतिक संस्थाएं होती हैं जो साल भर कोई न कोई ऐसा आयोजन करती रहती हैं, जिनमें कुछ बच्चों को तो अपने को सामने लाने का अवसर मिल ही जाता है। लेकिन सुदूर गांवों में तो ऐसा कोई अवसर नहीं होता। चकमक के ज़्यादातर पाठक ग्रामीण इलाकों में ही रहते हैं। इस माने में चकमक उनके लिए एक ऐसा माध्यम है जिसके पन्नों पर उन्हें अपने अंदर छिपी सृजनशीलता को प्रस्तुत करने का मौक़ा मिलता है।

गांवों में जहां घर के बड़े सदस्य अपनी रोज़ी-रोटी की जुगाड़ के लिए खेत-खलिहान में चौबीसों घंटे जुटे होते हैं, वहां स्कूल जाने वाले बच्चों के पास अपने मन की बात कहने, शिकवे-शिकायत करने को कोई नहीं होता। चकमक के मेरा पन्ना के पन्नों पर इसका आभास किया जा सकता है कि वे अपनी पढ़ाई, अपने स्कूल, अपने शिक्षक, अपने आसपास के जनजीवन के बारे में क्या सोचते हैं, उसे



किस तरह देखते हैं।

कहना यह चाहते हैं कि चकमक तमाम अन्य पत्रिकाओं की तरह मात्र एक और पत्रिका नहीं है, बल्कि वह एक शैक्षिक आंदोलन और ज़रूरत से उपजी है। और यह ज़रूरत जिनकी है उन्हें और उनकी कल्पनाशीलता, सोच और अभिव्यक्ति को नज़र-अंदाज तो नहीं किया जा सकता।

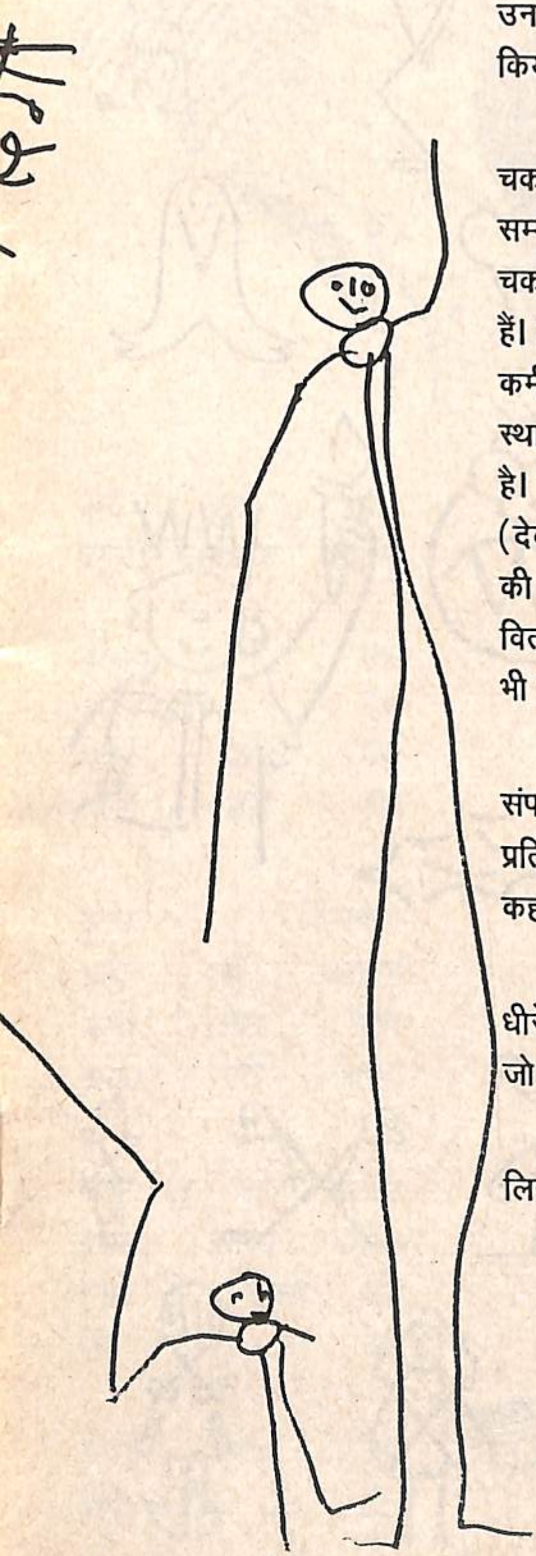
यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं है कि संभवतः हिंदी में चकमक ही एक मात्र ऐसी बाल पत्रिका है जो बच्चों की रचनाओं को सम्मान के साथ प्रकाशित करती है, फिलर की तरह नहीं। हालांकि चकमक के पन्नों पर सीमित संख्या में ही रचनाएं प्रकाशित हो पाती हैं। कारण यह है कि पन्ने केवल चार होते हैं और रचनाएं चौगुनी। इस कमी को पूरा करने के लिए भी प्रयास हुए हैं। इसके फलस्वरूप स्थानीय स्तर पर सायक्लोस्टाइल पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ है। इनमें *बाल चिरैया, गुलगुला* (पिपरिया); *बालकलम, गिल्ली-डंडा* (देवास) और *चिलबिला* (हरदा) प्रमुख हैं। बाल कलम में तो बच्चों की टीम ही सामग्री एकत्रित करने, संपादन करने और पत्रिका को वितरित करने का काम भी करती है। कहना न होगा कि ये पत्रिकाएं भी इसी आंदोलन की उपज हैं।

मेरा पन्ना के इन लेखकों, चित्रकारों से लगातार संवाद, संपर्क भी बनाकर रखा जाता है। लगभग हर रचना पर सकारात्मक प्रतिक्रिया से पत्र द्वारा अवगत कराया जाता है। चाहे वह कविता हो, कहानी हो या उनके बनाए चित्र।

अंत में यह कहना बड़बोलापन नहीं होगा कि चकमक धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने वालों का एक ऐसा वर्ग भी तैयार कर रही है, जो एक नया रचनात्मक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर सामने आएगा।

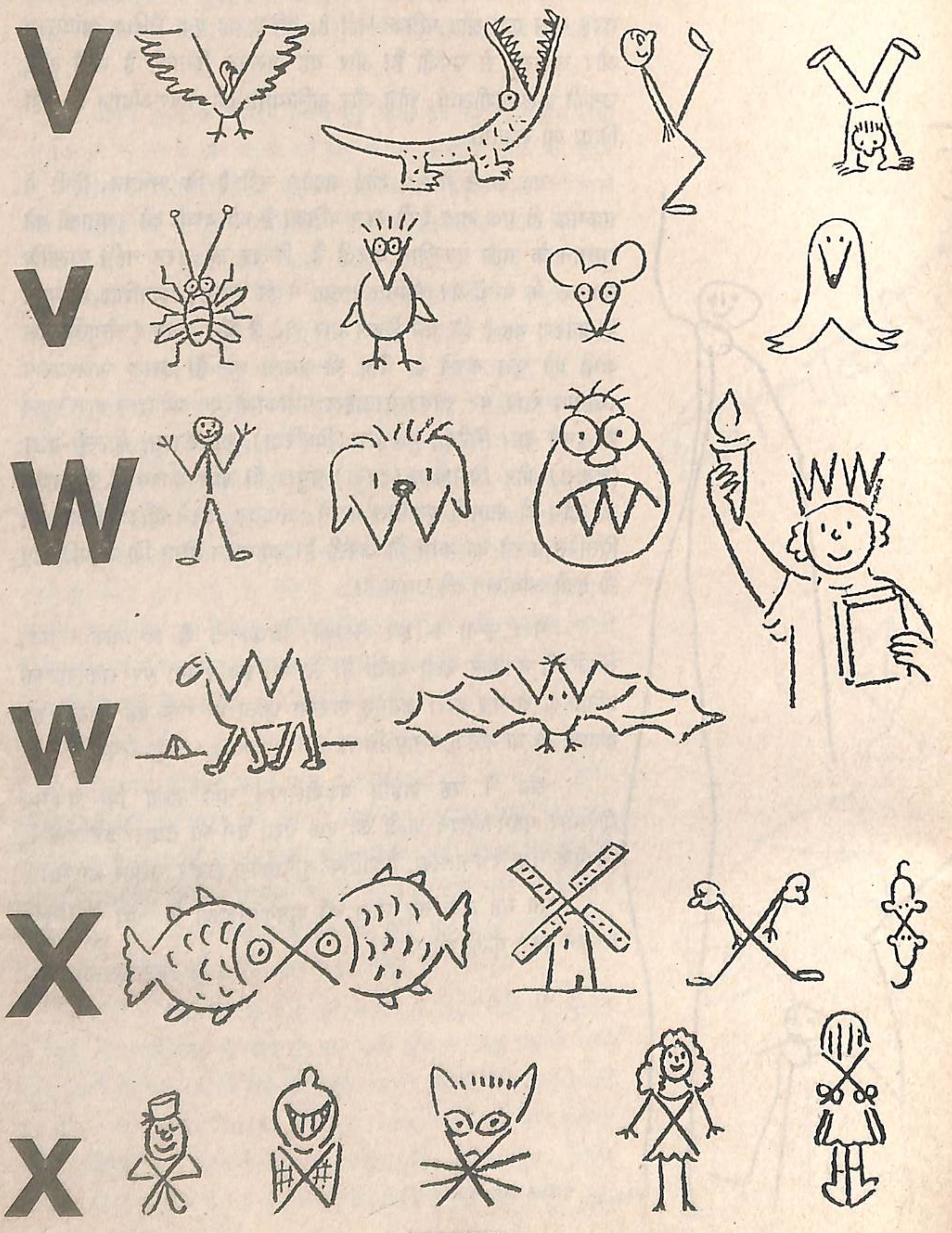
तो यह अंक नए साल की शुभकामनाओं के साथ मेरा पन्ना लिखने-पढ़ने वालों की नज़र!

□ चकमक



यशोधन गंदगे, पांच वर्ष, पुणे

तुम भी बनाओ



दो कविताएं

बूझो..?



बूझो... बूझो... बूझो!
मग़ज़ लगाकर जूझो!!

चौपाया है एक
वाहन-मुटिया नेक
पर्वत जैसी पीठ
मीलों लंबी दीठ

दुर्गम रेगिस्तान
लांघे ज्यों आसान
कांटों भरा बबूल
खाना उसे कबूल

कब पड़ जाए अकाल
रखता इसका ख्याल
तन में भोजन बैंक
औ पानी का टैंक

पीता उगला घूंट
कहो कौन जी? ऊंट

बूझो.. बूझो.. बूझो!
मग़ज़ लगाकर जूझो!!

पूछो डील न डौल
दस-दस गज का तौल
सागर में आवास
पर मछली न ख़ास

लेता जब विश्राम
जल पर बनता धाम
कर लो उसको याद
बोलो सिंदाबाद

उगले नाक अपार
ज्यों नल से जलधार
होता जब टकराव
गोते खाती नाव

तन में भरती तैल
कहो कौन जी? व्हेल

❑ रामवचन सिंह 'आनंद'



सभी चित्र : हेमंत खरे

मेरा पन्ना

मैं और मेरा कुत्ता

एक दिन मैं सब्ज़ी लेने बाज़ार गया। मेरा कुत्ता भी मेरे साथ था। एक बैल मुझे मारने के लिए दौड़ा। मैं भागा, मेरा कुत्ता बैल पर झपट पड़ा और भौं-भौं करने लगा। फिर बैल भाग गया और मैं और मेरा कुत्ता सब्ज़ी लेकर घर वापस आए।

❑ परमानंद सोनी, छठवीं, दतिया



अभय आरस

एक दिन

जब रात को मैंने सुबह जल्दी उठने के लिए अलार्म घड़ी में चाबी भरी तो अलार्म घड़ी की चाबी टूट गई। मैंने वह घड़ी चुपचाप रख दी और सो गया।

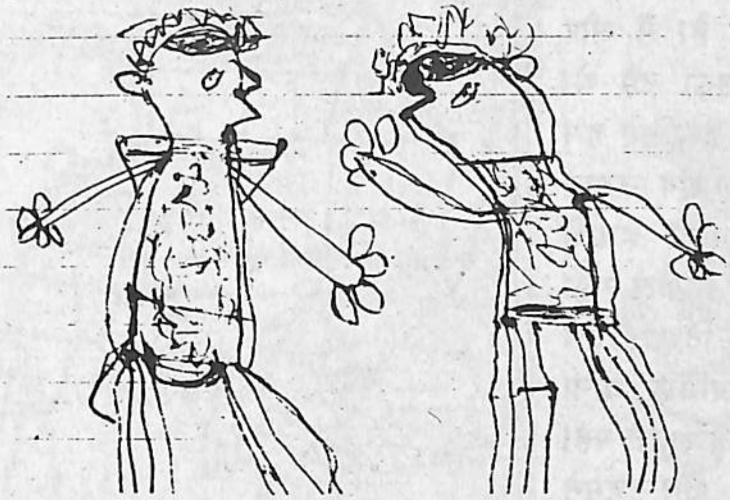
जब सुबह हुई तो देखा कि आठ बजने को हैं। मैं तैयार हुआ। जब मम्मी ने देखा कि मैं स्कूल के लिए लेट हो गया हूं तब उन्होंने मुझे डांटा क्योंकि मेरा स्कूल साढ़े सात पर लगता था। मैंने स्कूल पहुंचकर देखा मास्टर जी पढ़ा रहे थे। मुझे देखकर गुस्सा हुए और बस्ता लेकर पीछे ले जाकर मुझे खड़ा कर दिया। मुझे जब बैठने का आदेश मिला तो मैं बैठ तो गया पर पढ़ने में मन नहीं लगा और मैंने गृहकार्य नहीं लिखा।

जब छुट्टी हुई तो मैं घर पहुंचा। मम्मी ने मुझे खाना दिया और गृहकार्य देखने लगीं। जब गृहकार्य की डायरी ख़ाली देखी तब वे मुझसे गुस्सा होकर बोलीं कि गृहकार्य क्यों नहीं लिखा? मैंने बहाना बना लिया कि सिर दर्द कर रहा है। और स्कूल में भी कर रहा था इसलिए नहीं लिखा। उन्होंने झट उठकर मुझे एक टिकिया खाने को दी। पर सिर दर्द कर नहीं रहा था। गोली खाने से जलन व खुजली शुरू हो गई। पापा जी ने तुरंत डाक्टर को बुलाया। तब कहीं दवा हुई और दो-चार दिन बाद ठीक हुआ।

❑ भरत कुमार उपाध्याय, चौदह वर्ष, बड़ायलहरा



दोस्ती को दुश्मनी में बदला



वेनीप्रसाद पटेल, छठवीं, पांजरा, पिपरिया

हम तीन दोस्त छात्रावास में रहते थे। साथ-साथ खेलते थे, साथ-साथ खाते थे और साथ-साथ पीते थे। एक बार अधीक्षक महोदय ने हमको केसूर से एक किलोमीटर दूर रामनगर में कैरोसिन लाने के लिए भेजा। हम दोनों केन आधी-आधी दूर उठाकर ले गए, एक ने नहीं उठाई। हम वहां से कैरोसिन लेकर निकले तो हमने कहा थोड़ी-थोड़ी दूर तीनों उठाकर ले जाएंगे। हम दोनों उठाकर ले आए फिर उसकी बारी आई, उसने उठाने से इंकार कर दिया।

उन दोनों ने पहले से ही प्लान बना लिया था कि मुझको पीटना है। उसने वहां से केन नहीं उठाई तो हम वहां पर झगड़े और मैंने उसे वहां पर पीट दिया तो वे दोनों फिर मुझसे बदला लेने की कोशिश में थे।

एक दिन वह जल्दी से सो गया तो एक लड़के ने उसके बाल धागे से बांध कर खींचे तो हम सब लड़के हंसे। तो उस दूसरे ने मेरे बारे में उसके कान भर दिए। फिर वह मुझको गाली देने लगा। मैंने कहा, ''मान जा अपन तीनों दोस्त हैं दोस्ती को क्यों दुश्मनी में बदलना चाहता है।''

वह नहीं माना और फिर हाथ उठाने को मजबूर कर दिया और मैंने उसे पीट दिया। इस तरह हमारी दोस्ती, दुश्मनी में बदल गई।

❑ आत्माराम चौहान, दसवीं, केसूर

बस में सांप

जब मैं महावीर बाल संस्कार केंद्र में पढ़ता था, वहां बस सुविधा थी। मैं और बहुत से बच्चे-बच्चियां बस द्वारा जाते थे। मगर एक दिन ऐसा समय आया जब बस से उठकर भागना पड़ा। दरअसल हुआ यूं, हमारी पूरी छुट्टी हुई तो उससे पहले दो सांप बस के इंजन में घुस गए। जब सब बैठ गए तो सर ने कहा, ''बस में सांप हैं।'' तो सब बच्चे उतर गए। बहुत खोजबीन करने पर एक सांप निकला।

❑ नितिन खरे, सातवीं, टीकमगढ़



पतंग और पिटाई

एक बार की बात है। मैं और मेरा भाई पतंग उड़ा रहे थे। छुट्टी का दिन था इसलिए हम लोग सुबह से ही पतंग उड़ाने में लगे थे। शाम को हमारी पतंग बहुत ही दूर निकल गई। वह बहुत छोटी-सी दिखाई देने लगी। हम और अधिक धागा छोड़ते रहे और मज़े लूटते रहे। रात होने लगी थी। हमने अपनी पतंग नीचे खींचना शुरू किया। मगर पतंग बहुत दूर निकल गई थी इसलिए हमें नीचे खींचने में बहुत देर लग रही थी। इतने में हमारी मम्मी आईं और हमें डांटने लगीं। हमने कुछ ध्यान नहीं दिया। तब पापा आए और उन्होंने हम सभी की पिटाई कर दी। हमने मुश्किल से अपनी पतंग नीचे उतारी।

❑ रूपाली निगम, आठवीं, पानसेमल, खरगोन



पूर्णिमा सराठे

मेरी पिटाई हुई तो भैया को डांट पड़ी......

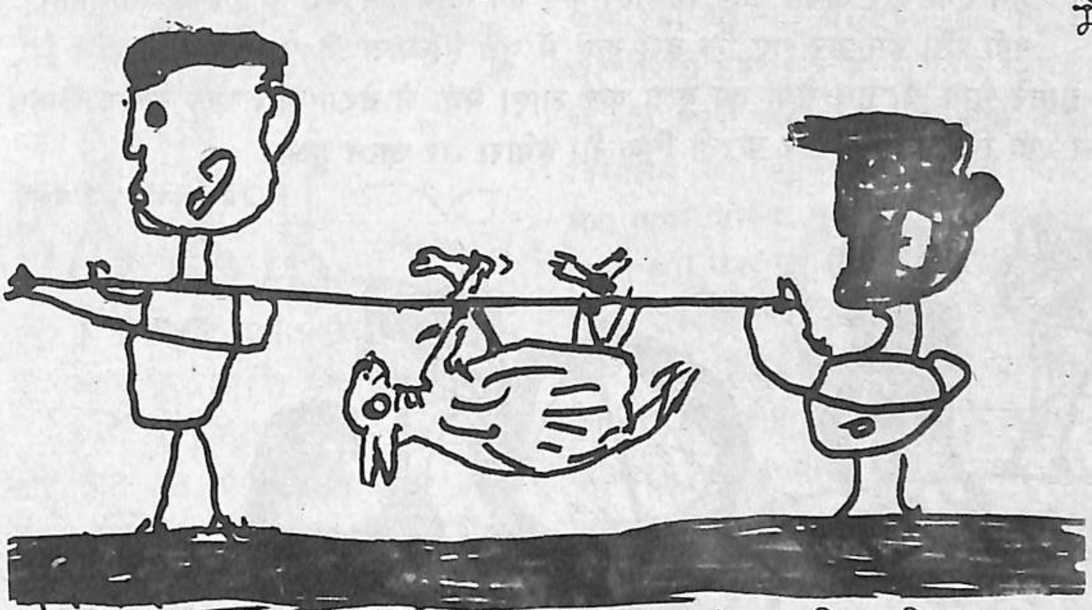
एक दिन की बात है। जब मैं चकमक पढ़ रहा था, तभी मेरे बड़े भाई-मनीष ने मुझे मारा और कहा, 'किसलिए ये सब पढ़ते रहते हो? अपने कोर्स का पढ़ते नहीं बनता?'

मैं रोने लगा। मैंने अपने पापा जी को बताया। पापा जी ने मुझे ही डांटा।

कुछ दिन बाद जब भैया उपन्यास पढ़ रहे थे तो मैंने चुपके से उन्हें देख लिया और पापा जी को बता दिया। पापा जी ने उन्हें ख़ूब डांटा। मैं तो बहुत ख़ुश हुआ। मनीष भैया मुझसे अब ज़्यादा बात नहीं करते।

❑ रंजीत सिंह कछवाहा, मंडला

जंगल में शिकार



अशोकी दीक्षित, जयपुर

मेरे पिता रोज़ जंगल में से जानवर मार कर लाते थे। उन जानवरों का मटन हम खाते एवं दूसरे लोगों को पंद्रह से बीस रुपए किलो बेचते थे। एक रोज़ मेरे बड़े भाई जंगल में शिकार खेलने गए। उनको बंदूक पकड़ना भी नहीं आता था। घर वापस आए तो हमारे पिता जी बोले, "कौन से जानवर को मारा?"

मेरे बड़े भाई ने जवाब दिया, "मेरे को जानवर बहुत सारे मिले लेकिन मैं उन जानवरों को मार ही नहीं पाया क्योंकि मेरे को तो बंदूक चलाना नहीं आती है। मैंने सोचा कि पिता जी आप बंदूक लेकर जाते हैं तो जानवर बंदूक देखकर मर जाते होंगे। इसीलिए तो मैं बंदूक ले गया था।"

पिता जी बोले, "बेटे, मेरे साथ चलना। तुझे जानवर का शिकार करना सिखा दूंगा।"

मेरे बड़े भाई और मेरे पिता जंगल में गए। उन्हें एक हिरण मिल गया। उसको मार डाला और जंगल में ही छिपा दिया फिर आगे बढ़ गए। आगे कोई जानवर नहीं मिला तो वापस उस हिरण के पास आ गए। वहां देखा तो वह नहीं मिला। मेरे बड़े भाई को एक सुअर भागता हुआ दिखाई दिया। वो बोले, "वो भाग कर जा रहा है, मरा हुआ हिरण।"

पिताजी ने उसका पीछा किया। सुअर घने जंगल में छुप गया। सुअर को गुस्सा आया तो वह चिल्लाता हुआ मेरे पिता जी के पीछे लग गया और मेरे पिता जी को ख़ूब रपटाया। तब से मेरे पिता जी ने जंगल में शिकार करना छोड़ दिया।

सुअर दो तरह के होते हैं। वह सुअर नहीं जो गांव में रहता है। जंगली सुअर को गुस्सा आ जाता है तो मनुष्य को चीर-फाड़ कर मार देते हैं, वही जंगली सुअर है।

❑ **श्रवण कुमार कांकड़िया, दसवीं, सतवास, देवास**

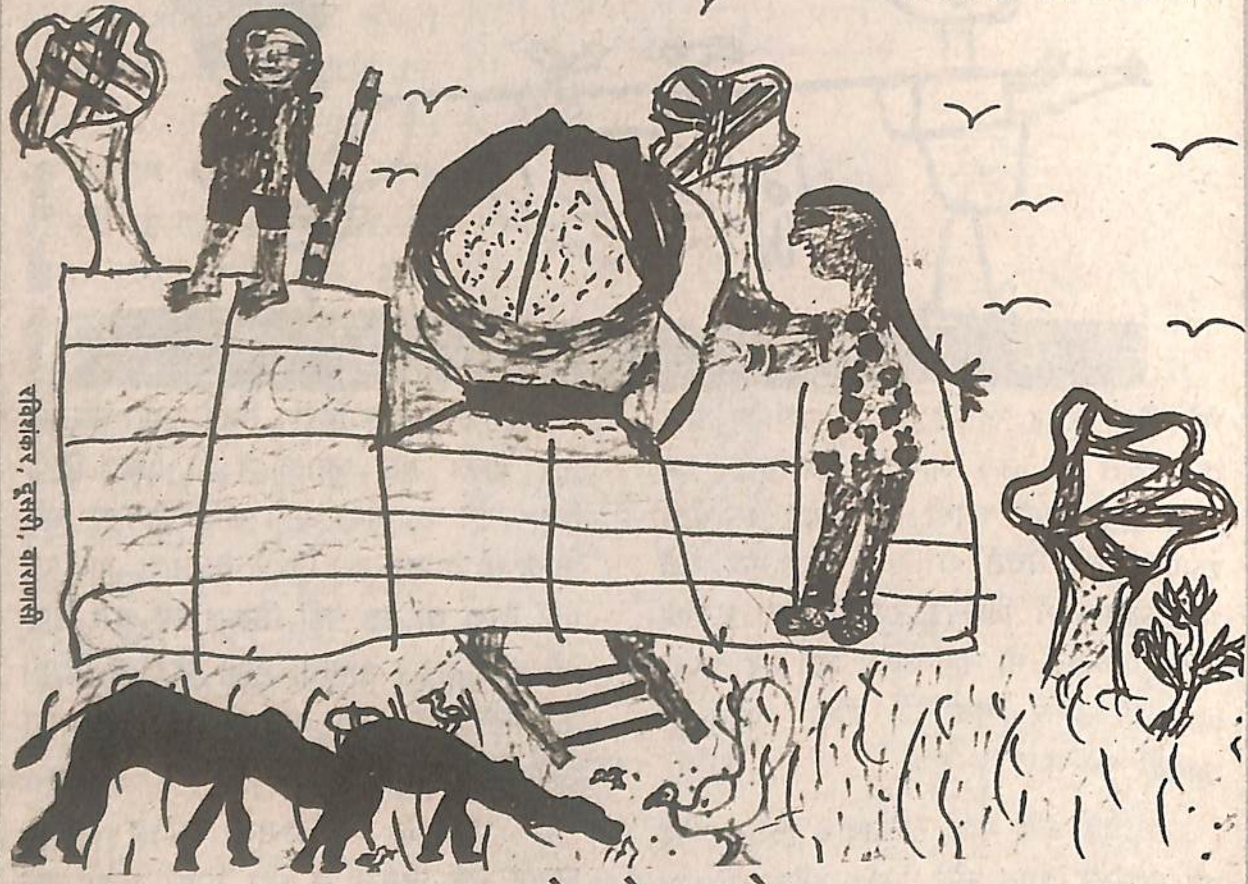


मेरा पन्ना

कुएं में चिड़िया

हम एक बार अपने कुएं पर गए। कुएं की कुछ दूरी पर से क्रर-क्रर की आवाज़ आ रही थी। हम डर गए कि इस कुएं में भूत है। पास ही में एक कुआं और था, वहां पर हमारे भैया थे। हम भैया को बुला कर लाए। भैया ने देखा और एक पत्थर फैंका। कुएं में से एक चिड़िया क्रर-क्रर करती निकली। हमारा डर ख़त्म हुआ।

❑ ब्रज किशोर वर्मा, देवली, देवास



रविशंकर, दूसरी, वाराणसी

पढ़ने से भागे

एक बार मैं और मेरे दो दोस्त और थे। हमने सोचा कल सुबह स्कूल नहीं जाना है। दूसरे रोज़ हम तीनों के तीनों जल्दी उठकर जंगल में भाग गए। बाद में मास्टर हमें घर बुलाने आया तो हमारे घर वालों ने कहा कि वे तो भाग गए कहीं।

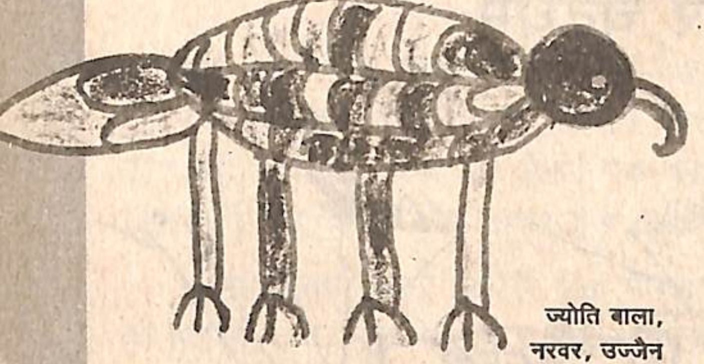
मास्टर जंगल की तरफ हम को ढूंढने गया। हम एक झाड़ी की आड़ में बैठे थे। मास्टर ने हमें देखा और आवाज़ लगाई। हमने देखा मास्टर आ रहा है तो हम वहां से आगे भाग गए। फिर भी मास्टर हमारे पीछे आ रहा था। हम और तेज़ भागे और नाले में जाकर छिप गए। मास्टर वापस लौट गया।

फिर वह सारे स्कूल के बच्चों को लेकर आया। जब तक वे हमें पकड़ने आए हम घर आ गए। मास्टर ने हम तीनों के घर आकर हमको समझाया और मारा भी।

❑ कैलाश बारेला, पांचवीं, नयापुरा, देवास



नीला तोता



ज्योति बाला,
नरवर, उज्जैन

एक दिन मैं खेत पर गया। उस खेत में ज्वार थी। ज्वार के खेत के बीचों-बीच एक नीम का पेड़ भी था। उस नीम के पेड़ पर बहुत सारे तोते बैठे थे। मैं उन तोतों को देखता रहा। मुझे बहुत ही प्यारे लग रहे थे। थोड़ी देर बाद सारे के सारे तोते नीचे उतरे और ज्वार चुगने लगे। उस दिन मैं घर वापस आ गया।

दूसरे दिन मैं गोंद को पत्थर पर पीसकर और पानी में भिगोकर ले गया। बहुत सारे तोते पेड़ पर बैठे थे। मैंने उस नीम के पेड़ के नीचे जाकर पांच-सात ज्वार के पेड़ों पर गोंद लगा दिया। फिर नीम के पेड़ पर एक छोटा-सा पत्थर फैंका। सारे तोते ज्वार के पेड़ों पर बैठ गए। एक तोता गोंद लगाए हुए पेड़ पर बैठ गया और चिपक गया। मैंने उस तोते को पकड़ लिया। मेरे पास नीली स्याही का पेन था। मैंने उसकी स्याही से तोते को रंग दिया। अब वह तोता सबसे अलग नज़र आ रहा था।

जब भी मैं खेत पर जाता हूं तो वह नीले रंग का तोता अलग ही दिखाई देता है और अच्छा लगता है। अब मेरे घर वाले उस खेत को 'नीले तोते वाला खेत' के नाम से जानते हैं।

❑ हनुमान प्रसाद बैरवा, जयपुर

पसीना आ गया

एक बार की बात है, मेरी परीक्षाएं चल रही थीं। दो प्रश्न-पत्र हो गए थे। तीसरा प्रश्न-पत्र अगले दिन ग्यारह बजे से था। हमसे कहा गया कि साढ़े दस बजे विद्यालय आ जाना। सो मैं आ गया था। मेरा एक दोस्त नया कंपास ख़रीद कर लाया था। उस पर फ़िल्मी हीरो-हीरोइनों के चित्र थे। हमारे विद्यालय में ऐसे कंपास लाना मना है। मैंने कहा, 'यह कंपास क्यों लाए?' वह कोई उत्तर नहीं दे सका। फिर मैंने वह कंपास पास खड़े आचार्य जी को दिखाया। उन्होंने उस दोस्त को ख़ूब फटकार लगाई और दो चांटे भी जड़ दिए। उन्होंने मुझे बुलाया तो मुझे पसीना आ गया। उन्होंने पूछा, ''ये कौन-से हीरो-हीरोइनों के चित्र हैं?''

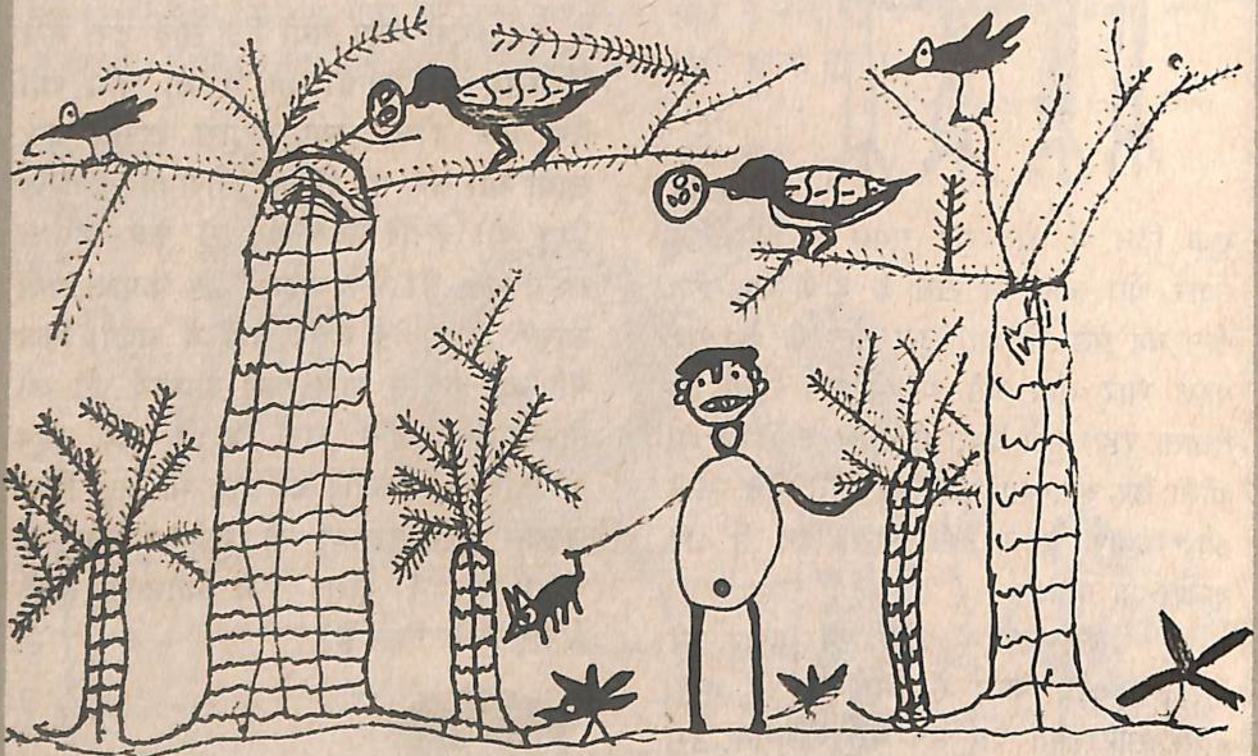


मीना कुमारी
छठवीं, कन्नौद

मैं उन आचार्य जी से डरता हूं। डरते हुए मैंने बता दिया। फिर आचार्य जी ने कहा, ''हमें सबका ज्ञान होना चाहिए और तुम्हें डरने की क्या बात है?'' तब आचार्य जी ने अपना रूमाल निकालकर मेरा पसीना पोंछा और मैंने ठंडी सांस ली।

❑ बृजेश काबरा, सातवीं, हरदा

चूहा और चटघम



दामोदर सिंह, पांचवीं, उंचिया, दतिया

एक बार मैं जंगल में घूमने गया था तो एक चूहा मिला। चूहे ने कहा, ''कहां जा रहे हो, भाई?''

मैंने कहा, ''आपके गांव में ही आया हूं।''

चूहा हंसकर बोला, ''अरे भाई, मैं एक बात आपसे पूछूं?''

मैंने कहा, '' अरे क्यों नहीं?''

चूहे ने कहा, ''आपका नाम क्या है?''

मैंने बोला, ''मेरा नाम चटघम है।''

चूहा बोला, ''यह नाम कैसा?''

मैंने कहा, ''बस, कोई ज़्यादा चखचख करता है तो एक चटघम लगा देता हूं।''

चूहा दौड़कर बिल में भरा गया। मैं हंसता-हंसता वापस घर लौट आया।

❑ मांगीलाल भावसार, नवमीं, सतवास, देवास



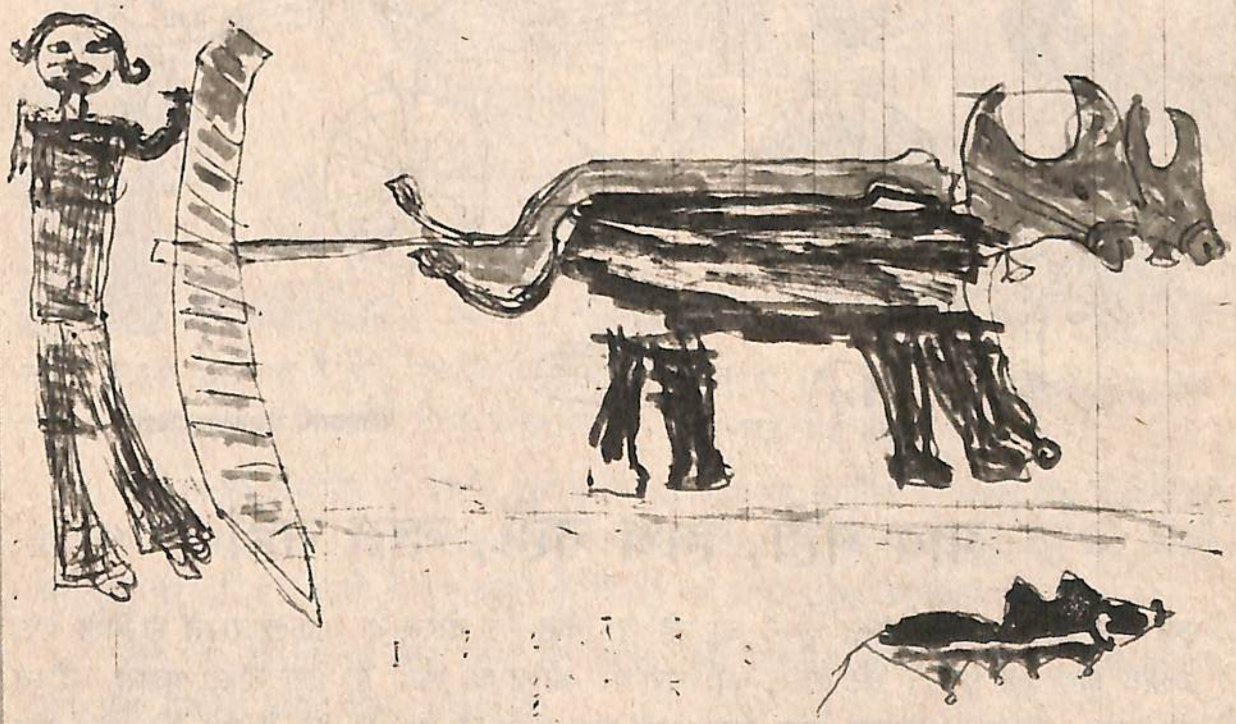
मैंने हल चलाया

एक बार की बात है हमारी मामी जी का देहांत होने के कारण मैं अपने मामा जी के यहां गया था। वहां दो कटवा की ज़मीन ख़ाली पड़ी थी। उस ख़ाली ज़मीन में ईख बोना था। एक दिन मामा जी बीमार पड़ गए। उसी दिन ईख बोना था। मामा जी ने कहा, ''तुम और भैया जाओ और जाकर ईख लाकर बोओ।''

हम हंसिया लेकर ईख के खेतों में गए और ईख काट कर खेत में ले आए। फिर बैलों को हल में बांधा। भैया ने कहा, "तुम हल चलाओ हम ईख बोएंगे।"

मैं तो डर से परेशान हो गया था, क्योंकि मैंने कभी भी हल नहीं चलाया था। फिर भी डरते-डरते हल को धीरे-धीरे चलाने लगा। हल चलाते समय कभी बैल पूरब दिशा की ओर जाता तो कभी उत्तर दिशा की ओर। बैल बहुत दौड़ा रहा था। मैं भी दौड़ता रहा। जब हल चलाते हैं तो हाथों में छड़ी रखते हैं। बैलों को किसी भी दिशा में मोड़ना हो तो उसकी पीठ पर छड़ी से धीरे-धीरे मारते हैं। तो बैल मुड़ते हैं। मैं हल चलाता, भैया ईख बोते इस तरह ईख बोया गया।

हल चलाने के बाद खेत में चौकी दी जाती है। हल को निकाल कर घर ले गए और चौकी लाए। फिर बैलों में चौकी लगाई। भैया ने कहा, "तुम इस चौकी पर चढ़कर बैलों को चलाओ।"



ईश्वर पाटीदार, पांचवीं, दहेरिया साहू, देवास

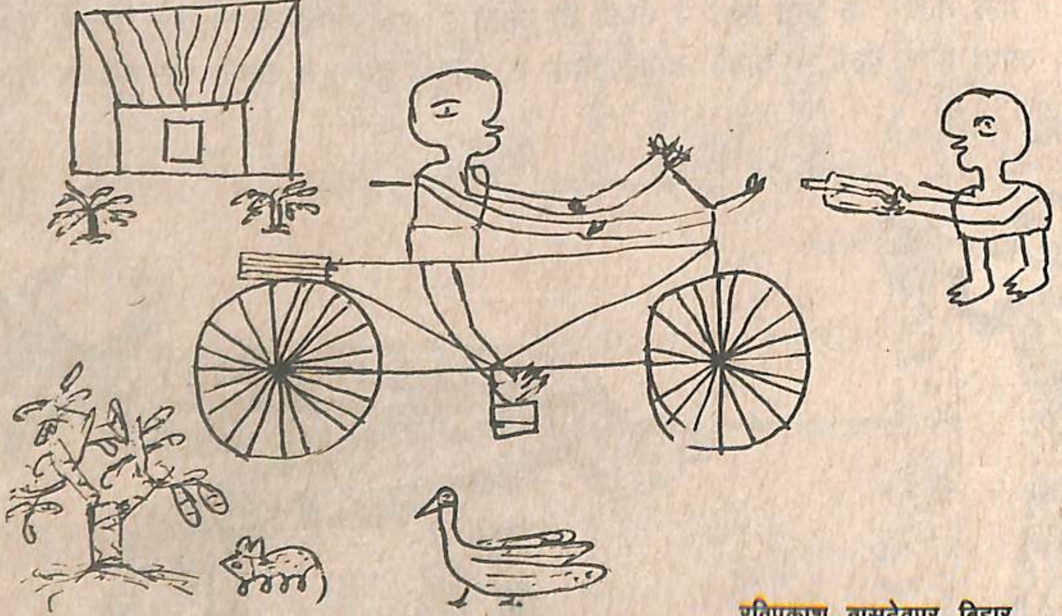
मैं फिर डरने लगा कि कहीं गिर न जाऊं। डरते-डरते चौकी पर चढ़ा और हाथों में छड़ी लेकर बैलों को हांकने लगा। फिर धीरे-धीरे बैल चलने लगे। कभी बैल दौड़ने भी लगते थे। जब बैल दौड़ते थे तब मैं रस्सी ज़ोर से पकड़े रखता था ताकि गिरूं नहीं। फिर बैल धीमे हुए और धीरे-धीरे चलने लगे। अचानक दोनों बैल बहुत तेज़ी से दौड़ने लगे और मैं गिर गया। मेरे शरीर में उन बैलों का गोबर लग गया। शरीर में कहीं-कहीं कट भी गया।

मैंने जल्दी उठकर उन बैलों को रोका। उस समय तक कुछ ही ज़मीन चौकी होने के लिए बच गई थी। फिर हमने उतने को पूरा किया। मैं बैलों को घर ले आया और भैया कंधे पर चौकी ले आए। घर आकर बैलों को खाने को दिया और हम नहाने लगे। मामा जी ने पूछा, "पूरी ज़मीन में ईख बो दी।"

हमने कहा, "हां, पूरी ज़मीन में ईख बो दी।"

इस तरह मैंने हल चलाया।

❑ **प्रेम कुमार, कंकड़बाग, पटना**



रविप्रकाश, वासुदेवपुर, बिहार

पांव नहीं, हाथ नहीं, दांत नहीं

एक बार मैं और मेरा दोस्त घूमने जा रहे थे। किंतु मेरे दोस्त के अंकल रास्ते में मिल गए। उन्होंने कहा कि तुम्हें (मेरे दोस्त को) घर पर आवश्यक कार्य है। मेरा दोस्त मुझसे, 'दोस्त मुझे माफ़ करना।' कहकर चला गया। मुझे घर जाना तो था ही, सो मैं घर की ओर चल दिया।

रास्ते में मेरा मज़ाकी (हंसाने वाला) दोस्त मिल गया। वह भी सायकिल पर सवार था। हम दोनों साथ-साथ चल रहे थे। उसने सायकिल के पैडिल पर से पांव उठाकर कहा, ''देखो मेरे पांव नहीं हैं!''

थोड़ी दूर जाने पर वह हाथ छुपाकर बोला, ''देखो मेरे हाथ नहीं हैं!''

मैं देख ही रहा था कि वह धड़ाम से गिर पड़ा। उसने अपना मुंह संभाला तो उसके दो दांत गिर गए थे। वह रोता हुआ बोला, ''देखो मेरे दांत भी नहीं हैं।''

❑ **नरेंद्र सिंह, नवमीं, नरवर, उज्जैन**

सिर के बाल उतारे



अभी जुलाई की बात है मेरे पिताजी के भैया की मृत्यु हो गई थी। मृत्यु के दस दिन बाद परिवार के पुरुष वर्ग के लोगों के बाल उतारने के लिए बाबू नाई आया।

मैं इस वर्ष छीपानेर में दसवीं क्लास में पढ़ रहा था इसलिए मैं बोला कि नाई दादा आप मेरे सारे बाल मत उतारो। तो गांव और परिवार के लोग एकदम से मुझे घूर कर देखने लगे। इस पर परिवार बालों ने मेरे कहने के विरुद्ध मेरे सारे बाल कटवा दिए।

अब मैंने भी निश्चय कर लिया कि स्कूल नहीं जाऊंगा, लेकिन फिर भी मुझे स्कूल जाना पड़ा क्योंकि पढ़ाई शुरू हो गई थी।

चित्र एवं कहानी ❑ रमेश कुमार सोनी, दसवीं, छीपानेर, होशंगाबाद



कुंतल भारद्वाज, बारह वर्ष

सन् 1985 की बात है। 15 अगस्त के दिन हमारे स्कूल से प्रभात-रैली निकली। सारे शहर में घूमने के बाद रैली सही स्थान पर पहुंची। रैली में मेरे साथ मेरे दो भाई और मेरी जीजी भी थी। रैली पहुंचने के बाद मेरी जीजी मुझे मेरे भाई के पास छोड़कर डांस देखने चली गई। मेरे भाई अपने दोस्तों से बात कर रहे थे। मैं भी डांस देखने के लिए भीड़ में चली गई। मैं भीड़ में कुछ समझ नहीं पा रही थी। मुझे बार-बार धक्के लग रहे थे। मैं बड़ी मुश्किल से भीड़ से निकली। मैंने सोचा कि अब घर चली जाऊं। मैं वापस चल पड़ी।

चलते-चलते मैं कसाईबाड़ा पहुंची। मैं रास्ता भूल गई थी और बहुत ही डर गई थी। मेरे मन में बहुत डर था। मैंने देखा कि मेरे पीछे कोई आ रहा है। मैं डरकर भागी और फिर छिप गई। मैंने देखा कि हमारे मोहल्ले के बैंड वाले भैया निकल रहे हैं। मैं उनके पीछे भागी। वे चलते गए और मैं भी उनके पीछे थी। मैंने सोचा कि अगर कोई पूछेगा कि तुम कौन हो तो मैं उन्हें अपने पिता का नाम बता दूंगी और कहूंगी कि मैं रास्ता भूल गई हूं, कृप्या मुझे घर छोड़ दीजिए। लेकिन किसी ने नहीं पूछा। मैं ख़ुश थी। बहुत देर तक चलने के बाद हम लोग मार्केट में पहुंचे। वे लोग अपनी दुकान में चले गए। मैं भी घर के रास्ते पर चल पड़ी। मैं घर पहुंची तो मम्मी बहुत परेशान थीं। मम्मी ने पूछा, ''भाई को छोड़कर कहां गई थी?''

मैंने कहा, ''मैं घर आना चाहती थी इसलिए चल पड़ी। मुझे क्या पता था मैं रास्ता भूल जाऊंगी।''

❑ **किरण शर्मा**

चकमक 92



चकमक 92



अबीर महेन्द्र, छह वर्ष, पिपरिया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
जनवरी				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31								
फ़रवरी							1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29							
मार्च	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31											
अप्रैल				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30									
मई						1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31						
जून		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30											

फ़रवरी: 8 बसंत पंचमी   18 संत रविदास जयंती

मार्च: 2 महाशिवरात्रि   19 होली

अप्रैल: 4 गुड़ी पड़वा   11 रामनवमी   13 बैसाखी
14 डॉ. अम्बेडकर जयंती   15 महावीर जयंती   17 गुड फ्रायडे

मई: 4 छत्रपति शिवाजी जयंती   16 बुद्ध पूर्णिमा

जून: 3 महाराणा प्रताप जयंती/छत्रसाल जयंती   12 ईद-उल-जुहा
24 वीरांगना दुर्गावती का बलिदान दिवस

■ केंद्र एवं मध्यप्रदेश शासन की छुट्टियां   ■ केवल मध्यप्रदेश शासन की छुट्टियां

गुरूगोविंद सिंह का जन्म दिन, 12 जनवरी; गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी एवं ईद-उल-फ़ितर, 5 अप्रैल रविवार के दिन हैं।

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	
जुलाई				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	
	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31									11 मोहर्रम
अगस्त							1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	3 नागपंचमी 13 रक्षाबंधन
	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31						15 स्वतंत्रता दिवस 21 जन्माष्टमी 31 गणेश चतुर्थी
सितंबर			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30											10 मीलाद-उन-नबी 26 सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या
अक्टूबर					1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	
	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31								2 गांधी जयंती 6 दशहरा 26 दीपावली (दूसरा दिन) 27 भाईदूज
नवंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	
	22	23	24	25	26	27	28	29	30													10 गुरुनानक जयंती
दिसंबर			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31										18 गुरु घासीदास जयंती 25 क्रिसमस-डे 31 गुरुगोविंद सिंह का जन्म दिवस

■ केंद्र एवं मध्यप्रदेश शासन की छुट्टियां ■ केवल मध्यप्रदेश शासन की छुट्टियां

दशहरा (महाष्टमी), 4 अक्टूबर और दीपावली, 25 अक्टूबर रविवार के दिन हैं।

चिड़िया

एक चिड़िया हमने देखी
रोज़ सुबह उठ जाती।
रोज़ बैठती वृक्ष हमारे।
पानी पीते हमने देखा।
शीशे में मुंह देखकर।

बहुत खुश हो जाती।
मनुष्य से डर जाती।
दाना चुगने घर पे जाती।
एक चिड़िया हमने देखी।

❑ पंकज चौधरी, नवमीं, देवास



रजनी शुक्ला, नौ वर्ष, चितूर (आ.प्र.)

म्हारा गांव का किसान

म्हारा गांव का किसान
सिर पर हाथ रखी के बैठिया है
पानी कब बरसेगा
राह देखी रिया है।

जंगल नहीं होने से
पानी नहीं बरसे हे
कुछ पढ़िया-लिखिया
ऐसी बात करे है।

पानी जल्दी अयजा
दुआ करी रिया है
चौपाल पर बैठिके
बादल देखी रिया है।

म्हारा गांव का किसान
सिर पर हाथ रखी के बैठिया है।

❑ टीकमचंद्र पाटीदार, देवास

बिल्ली का बच्चा मिला



निशा वनवे, ग्रोपलपुर, इटारसी

एक बार मुझे बाज़ार में एक बिल्ली का बच्चा मिला। मैं सोच रहा था कि यह कहां से आ गया? मैं सोचता रह गया; तभी सायकिल आई और उसने घंटी बजाई। मैं डर गया और अचानक गिर पड़ा। मुझे चोट आ गई।

जब मैं घर गया तो मां ने कहा, ''तुम्हें यह चोट कहां से आई?''

मैंने कहा, ''मैं गिर पड़ा।''

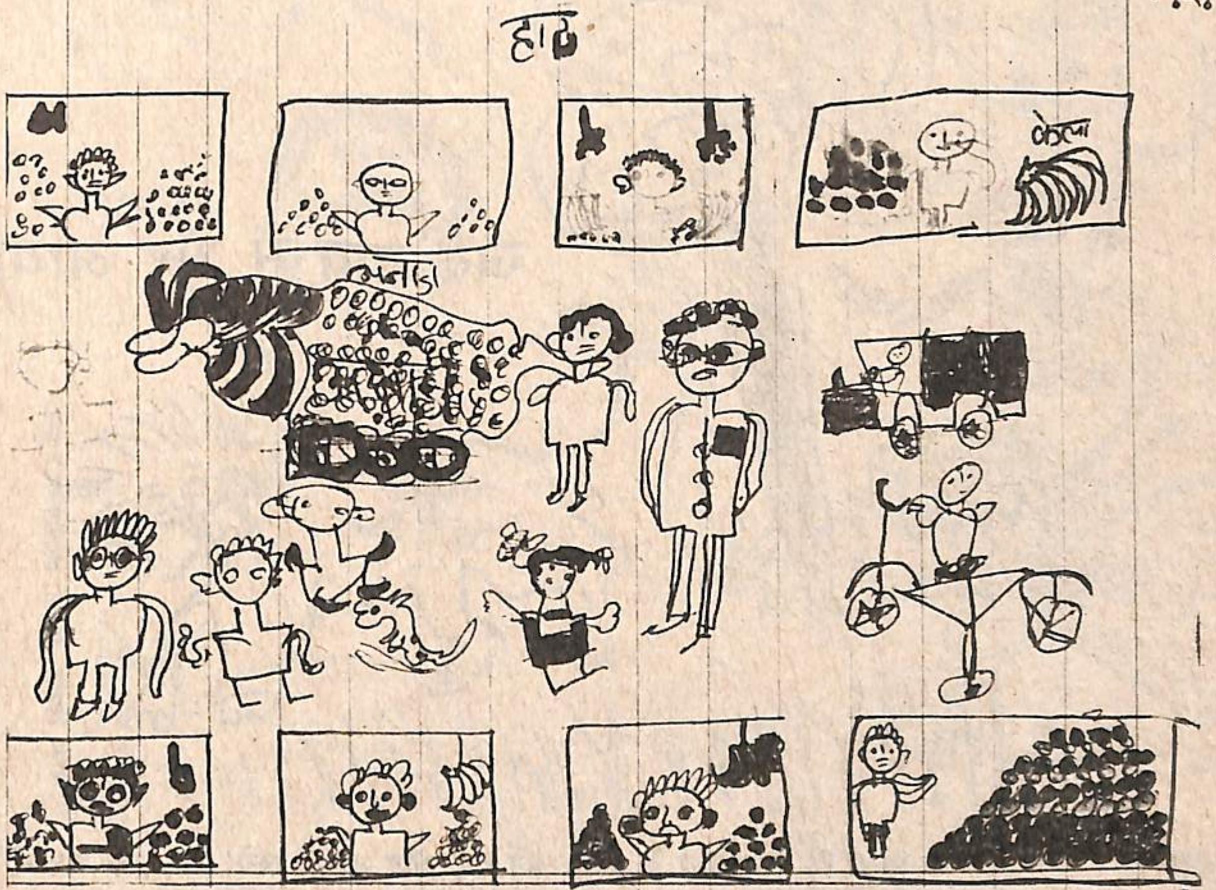
मां ने कहा, ''कैसे गिर पड़े?''

मैंने कहा, ''जाने कहां से बिल्ली आ गई। मैं सोचता रह गया। एक सायकिल वाला आया और उसने घंटी बजाई। मैं गिर पड़ा और मुझे चोट आ गई।''

मेरे पापा भी आ गए। उन्होंने भी मुझसे यही पूछा। मैंने सब बता दिया। फिर पापा ने मुझे एक बिल्ली का बच्चा ला कर दिया। फिर मैं बहुत ख़ुश हुआ।

❑ कुंदन पाराशर, चौथी, देवास

मैं और मेरा दोस्त



दिव्या अग्रवाल, सातवीं, भोपाल

मेरा एक दोस्त है वह और मैं हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। हम दोनों साथ-साथ पढ़ते-लिखते थे। एक रोज़ हम दोनों बाज़ार गए। हम दोनों दोस्तों ने वहां पर जलेबी खाई, उसके बाद हमने पान खाए और फिर हम दोनों ने बाज़ार किया। मेरे दोस्त ने सब्ज़ी ख़रीदी उसकी ज़ेब में पैसे नहीं थे। किसी ने उसकी ज़ेब काट ली। मैंने कहा, " दोस्त मैं देता हूं सब्ज़ी के पैसे।"

मेरा दोस्त कहने लगा, "दो। मैं तुम्हारा आभारी हो जाऊंगा।"

मैंने कहा, "अरे यार तू कैसी बातें करता है। चलो घर चलते हैं।"

हम दोनों घर आ गए। कुछ दिनों बाद मेरे दोस्त को किसी दूसरे दोस्त ने भड़का दिया, मेरे खिलाफ़ कर दिया। मेरे दोस्त ने मुझसे कहा, "मैं तुमसे दोस्ती नहीं रखता।" हम दोनों की दोस्ती ख़त्म हो गई।

❑ रामदास हरियाले, आठवीं, भिलाड़िया कलां, होशंगाबाद



जब गांव में शेर आया

विजय किशोर, सातवीं, हाटपीपल्या, देवास

जब मेरे गांव में शेर आया तो सब गांव के लोग डर गए और भागने लगे। शेर एक घर में घुसकर अपना भोजन ढूंढने लगा। उस घर में एक आदमी लेटा हुआ था। जब घर में शेर आया तो उस आदमी को शेर की बास आई। तो उसने सोचा कि शेर बैठा हैं तो हिलना नहीं चाहिए नहीं तो शेर मुझे खा जाएगा।

उसी समय उस आदमी को खुजली चली तो वह खुजाने लगा। शेर समझ गया कि यह मेरा शिकार है। उसी समय शेर आदमी के ऊपर झपटा। आदमी होशियारी से उस पलंग के नीचे घुस गया। शेर उसकी ओर गुर्राकर देखने लगा और धीरे-धीरे पलंग के नीचे की ओर जाने लगा और पलंग के नीचे घुस गया। पलंग बहुत वज़नदार था। आदमी बगल से निकल कर पलंग के ऊपर की ओर आ गया और पलंग से शेर को दबाने लगा। शेर दहाड़ने लगा उसी समय आदमी को घर में एक जगह चाकू पड़ा हुआ दिखाई दिया।

झट से पलंग से कूदकर चाकू लेने गया और चाकू लेकर आ गया और चाकू शेर की छाती में घुसा दिया। शेर दहाड़ते हुए मर गया।

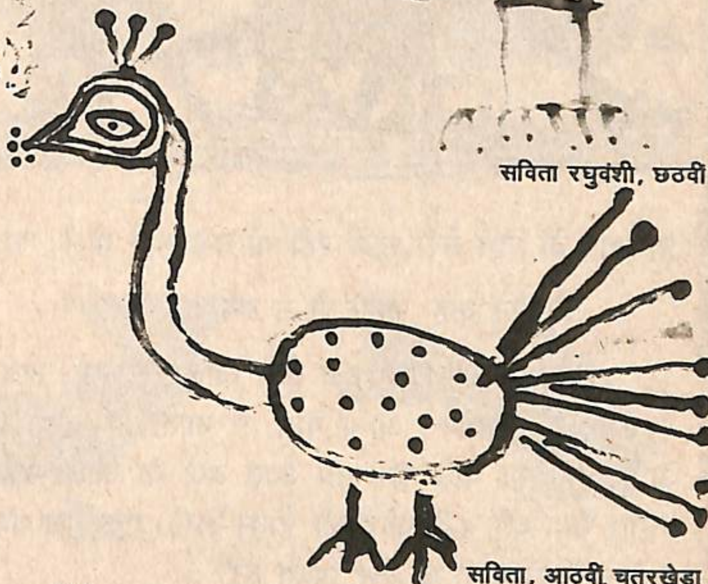
❑ अर्जुन सिंह रघुवंशी, आठवीं, चतरखेड़ा, होशंगाबाद



महेश



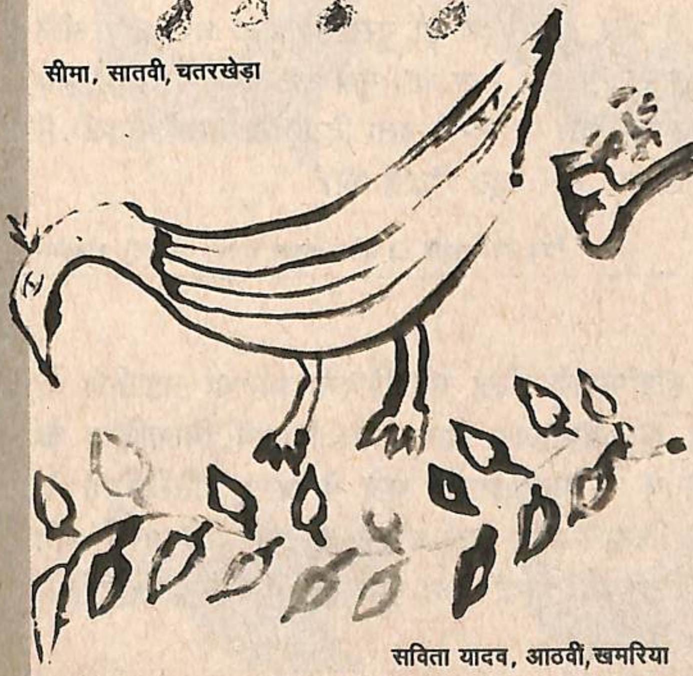
सविता रघुवंशी, छठवीं



सविता, आठवीं, चतरखेड़ा



सीमा, सातवी, चतरखेड़ा



सविता यादव, आठवीं, खमरिया



उमेश

एक दिन खेत जोतने गया



रविवार के दिन मेरी छुट्टी रही तो बड़े भाई बोले, "चल आज खेत जोतने।"

तो मैंने कहा, "मेरे से न बनेगा।"

भैया ज़बरदस्ती मुझे खेत जोतने ले गए। अब बड़े भैया थे तो उनकी बात माननी पड़ी। मैं क्या करूं जबरन जाना पड़ा, न जाता तो मार घलती। फिर खेत गया तो लगा जोतने। मैं आगे था भैया पीछे थे। अब आठ बजे के जोतते-जोतते दस बज गए। धूप भी अधिक लगने लगी। भैया को बड़ी ज़ोर की प्यास लगी। एक वृक्ष की छाया में हल खड़ा कर दिया और बोले, " मैं नदी से पानी पी कर आता हूं।"

पास में ही नदी थी। जब भैया पानी पीने चले गए तो मैं हल छोड़कर घर भाग आया। बैल भी जंगल की ओर हल लेकर भाग गए और वृक्ष में हल फंसा कर तोड़ डाला।

भैया पानी पीकर आए तो खेत में मैं और बैल न थे तो ग़ुस्से में भैया घर आए और आते ही पहले मुझे पूछा। मैं पहले से ही कुठकी में घुस गया था। मुझे कुठकी में घुसते समय मेरा भतीजा रामभजन देख रहा था। जब उससे पूछा तो उसने बता दिया कि चाचा कुठकी में घुसा है। तो भैया ने मुझको कुठकी से निकाल कर मेरी बहुत पिटाई की।

चित्र एवं कहानी ❑ उमेश कुमार कचेर, करकटी, शहडोल

बाल मेला

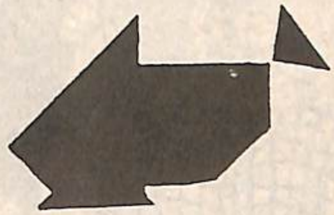
दिसंबर, 91 की 16-17 तारीख को होशंगाबाद जिले की सिवनी मालवा तहसील के भिलाड़ियाकलां गांव में एक बाल मेले का आयोजन किया था। जिसमें भिलाड़िया के अलावा आसपास के कई गांवों के बच्चों ने भी भाग लिया। मेले में अन्य गतिविधियों के अलावा अधूरी कहानी पूरी करने, कहानी लिखने और चित्र बनाने की गतिविधियां भी थीं। इस अंक में पृष्ठ 25 और 26 पर प्रकाशित कहानियां तथा पृष्ठ 27 पर प्रकाशित चित्र इस बाल मेले के ही हैं।

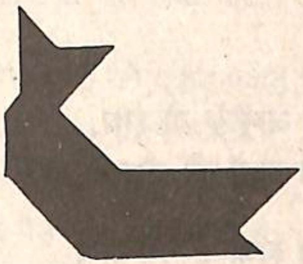
खेल पहेली

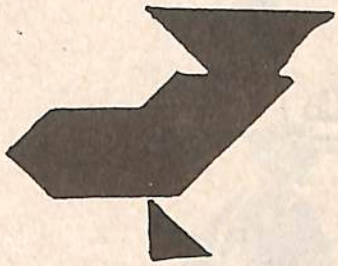


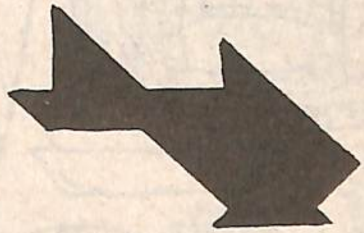
टेनग्राम के इन सात टुकड़ों को जोड़कर यहां दी गई विभिन्न आकृतियां बनी हैं। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)

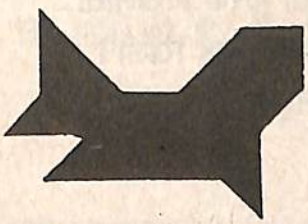


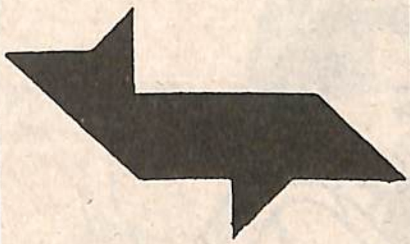






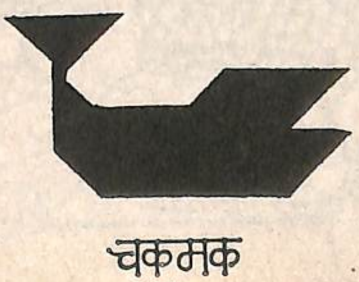




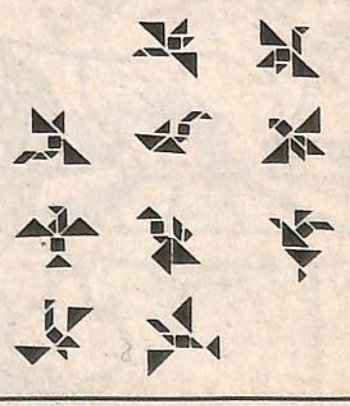








दिसंबर, 91 अंक के हल





मेरे अब्बू के हाथ

मेरे अब्बू के दो हाथ,
उन हाथों की और ही बात!

उन हाथों से मेरा अब्बू
चाक पर बर्तन है बनाता,
गीली चिकनी मिट्टी पर वह
जादू-सा करके दिखलाता,
घोड़े-बंदर, कई खिलौने
मेरे लिए बनाकर लाता!





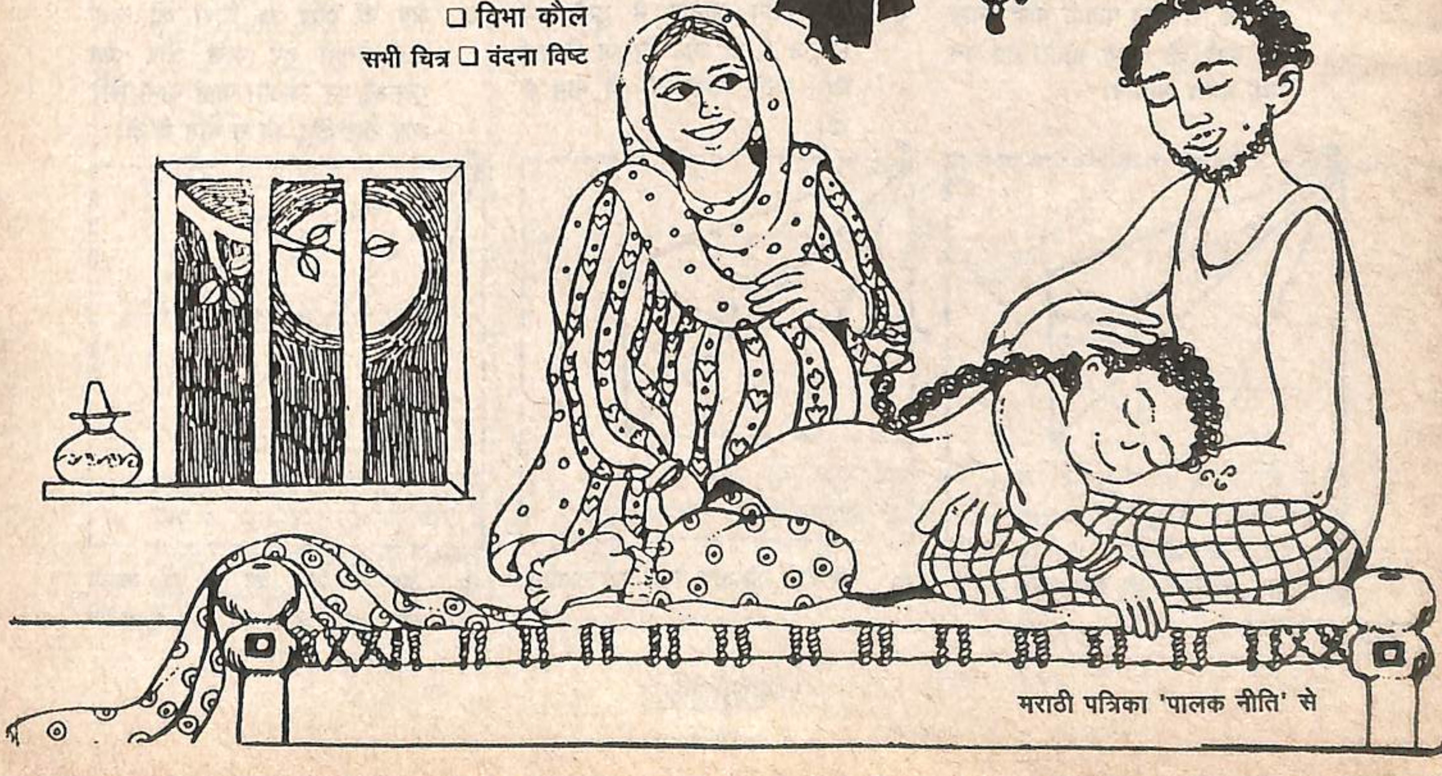
घर पर आकर उन हाथों से
सेंकता है वह मोटी-रोटी
मां के हाथों जैसी अच्छी
गर्म-नर्म-सी फूली रोटी
और चिढ़ाता मुझे प्यार-से
खींच के मेरी लंबी चोटी!

उन हाथों को पकड़-पकड़ के
पाठशाला को मैं जाती हूं,
उन हाथों का ले के सहारा
मैं पेड़ों पर चढ़ जाती हूं
और रात को उन हाथों की
थपकी से ही सो पाती हूं!
मेरे अब्बू के दो हाथ
उन हाथों की और ही बात!



❑ विभा कौल

सभी चित्र ❑ वंदना विष्ट

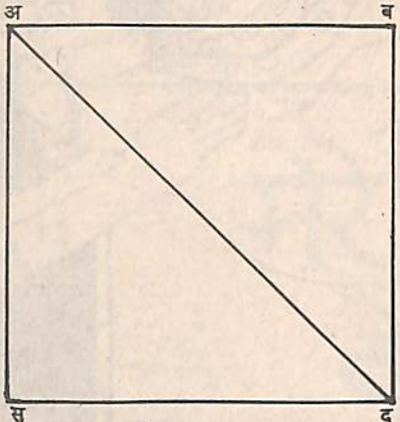


मराठी पत्रिका 'पालक नीति' से

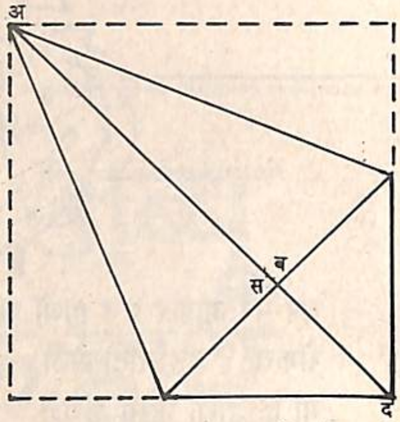
खेल काग़ज़ का

पिछले अंक में तुमने काग़ज़ मोड़ने की कला यानी ओरीगैमी की कुछ बुनियादी बातें समझी थीं और पतंग आधार से खरगोश बनाया था। इसी आधार से एक और 'चीज़' बनाओ।

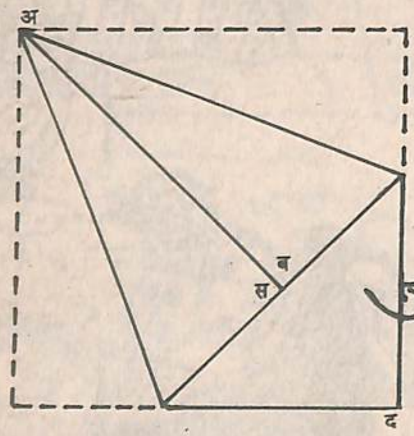
यहां जो चित्र दिए गए हैं, वे तुम्हारी मदद के लिए हैं। चित्रों के विवरण में कई जगह ऐसे सिरों का ज़िक्र आएगा, जो चित्र में नहीं दिख रहे होंगे। लेकिन अगर तुम काग़ज़ लेकर बनाओगे तो उसमें ये सिरे मिलेंगे ही।



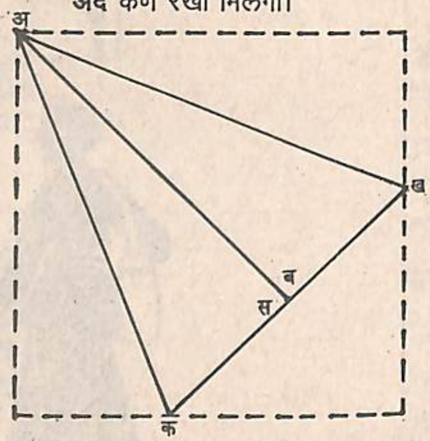
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। उसके सिरों को नाम दो। अब **स** सिरे को **ब** से मिलाते हुए खाई मोड़ बनाओ। काग़ज़ को खोलने पर **अद** कर्ण रेखा मिलेगी।



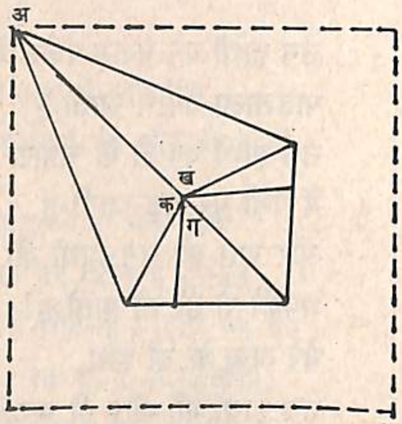
2. **अब** तथा **अस** भुजाओं को खाई मोड़ बनाते हुए कर्ण रेखा तक लाओ।



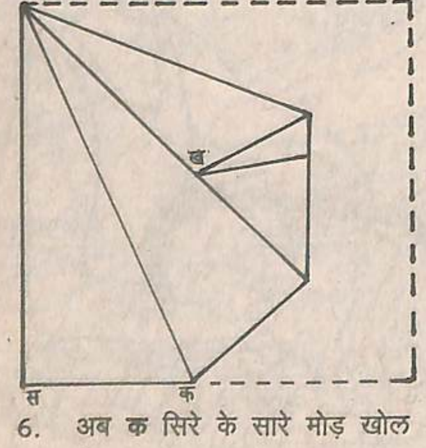
3. अब **द** सिरे को पहाड़ी मोड़ बनाते हुए पीछे की तरफ मोड़ो। यह बन गया **पतंग आधार**।



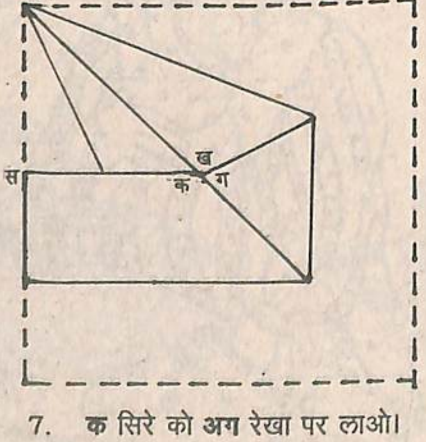
4. इस पतंग आधार में तुम्हें बड़े त्रिभुज में दो छोटे त्रिभुज दिखाई देंगे। इनके सिरों को भी नाम दे दो।



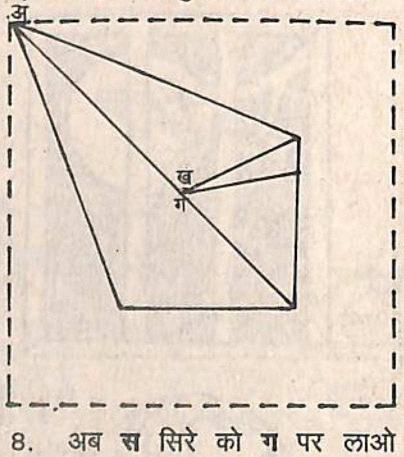
5. अब **क और ख** सिरों को खाई मोड़ बनाते हुए **अस** और **अब** भुजाओं पर लाओ। जहां दोनों सिरे आएं उस बिंदु को **ग** नाम दे दो।



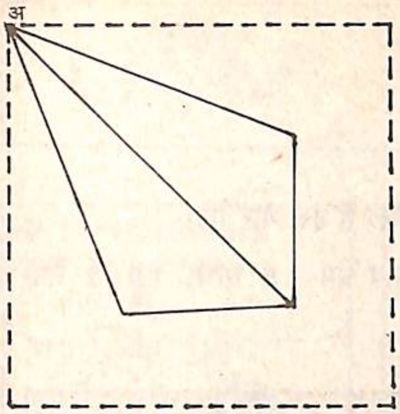
6. अब **क** सिरे के सारे मोड़ खोल दो।



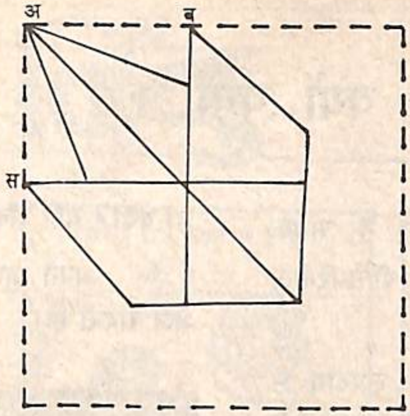
7. **क** सिरे को **अग** रेखा पर लाओ।



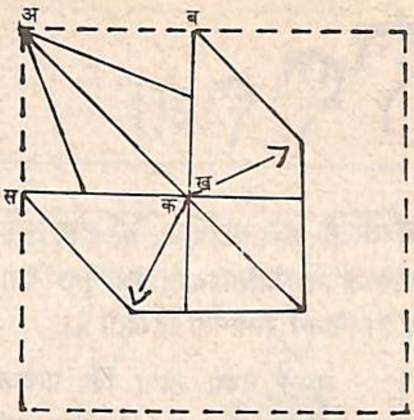
8. अब **स** सिरे को **ग** पर लाओ और **अस** भुजा को **अब** भुजा के समानांतर रखो।



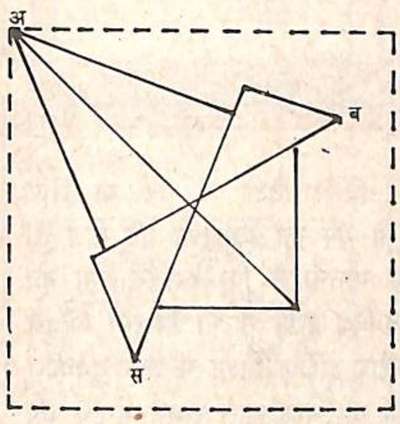
9. अब **ख** सिरे के मोड़ भी इसी तरह खोलो। **ख** सिरे को **अग** भुजा पर लाओ। **ब** सिरे को **ग** बिंदु पर ले जाओ।



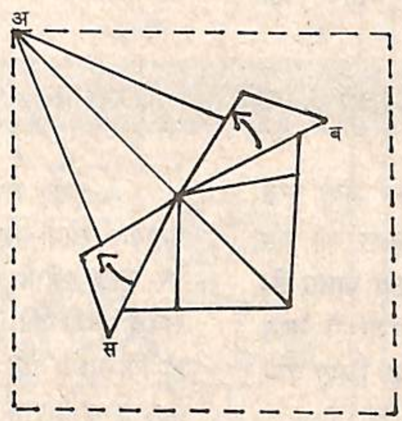
10. अब **स** और **ब** सिरों को पलटाकर ऊपर की ओर ले जाओ।



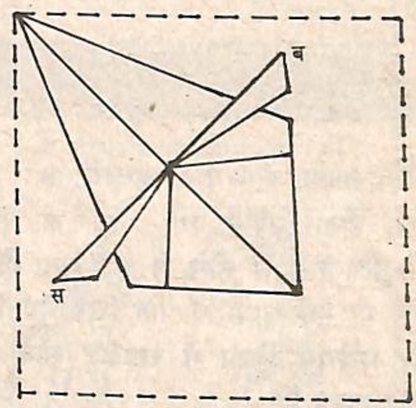
11. अब **कस** भुजा को मोड़कर **क** बिंदु से बाहर की ओर जाने वाले मोड़ पर (जिसे तीर द्वारा दिखाया गया है) लाओ। इसी तरह **खग** भुजा को **ख** से बाहर की ओर जाने वाले मोड़ पर लाओ।



12. इस तरह बनने वाले त्रिभुजों को खाई मोड़ बनाते हुए बीच में लंबाई में मोड़ लो।



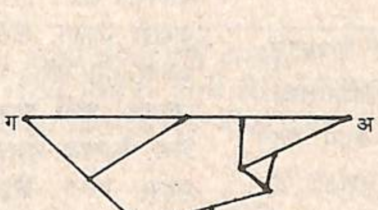
13. इन त्रिभुजों को एक बार फिर बीच से लंबाई में ऊपर की तरफ मोड़ दो।



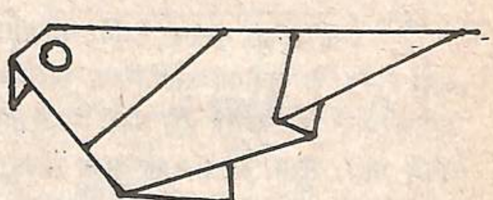
14. जो आकृति बनेगी वह इस तरह की होगी।



15. आकृति को पलटकर उसके **अ** सिरे के बीच के हिस्से को चित्र में दिखाए अनुसार थोड़ा-सा मोड़कर दोहरा कर लो।



16. आकृति को फिर से पलटो और **अग** रेखा पर मोड़कर दोहरा कर लो।



17. अब **ग** सिरे को अंदर की तरफ दबाकर और फिर उसका थोड़ा-सा हिस्सा बाहर की तरफ खींच कर चोंच बना लो। देखो तो क्या बन गया?



क्यों..क्यों..16

भारत में हर संप्रदाय के लोग रहते हैं। सबके अपने-अपने रीति-रिवाज हैं। कुछ ऐसे रीति-रिवाज भी हैं। जिनमें समानता दिखती है।

तुमने देखा होगा कि प्रत्येक संप्रदाय में सामान्य तौर पर हर विवाहित स्त्री कुछ ऐसे आभूषण या प्रतीक चिन्ह धारण करती है, जिससे पता चलता है कि वह विवाहित है। जैसे बिछिया, मंगल सूत्र, नथ या चूड़ी पहनना, मांग भरना, माथे पर बिंदिया लगाना आदि। लेकिन किसी भी संप्रदाय में **विवाहित पुरुषों के लिए ऐसे कोई प्रतीक नहीं है। क्यों?** यही सवाल है इस बार का!

अपने जवाब हमें **15 मार्च, 1992** तक भेज सकते हो।

ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

क्यों.. क्यों 11 : उत्तर

नींद वाला अंक यानी अगस्त, 91 का अंक तुम्हें याद होगा। उसमें क्यों.. क्यों का सवाल था कि **गोधूलि बेला में सोने से क्यों मना किया जाता है।** यह भी पूछा गया था कि **सिर पूर्व दिशा में तथा पैर पश्चिम दिशा में रखकर सोने के लिए** क्यों कहा जाता है।

लगता है ज़्यादातर पाठक सवाल पढ़कर सो गए। क्योंकि हमारे पास बहुत कम पत्र आए हैं। और वे भी किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। ख़ैर....

हमारा यह मानना है कि ज़्यादातर धारणाएं रहन-सहन के तरीक़ों सामाजिक परिस्थितियों तथा रीति-रिवाज़ से बनती हैं। जैसे गांवों में शाम का समय गाय, भैंसों, बैलों तथा अन्य पालतू पशुओं के घर लौटने का होता है। इन पशुओं के लौटने पर उनको बांधने की व्यवस्था करना, चारा-पानी देना आदि काम होते हैं। दिन की समाप्ति पर रात्रि की शुरूआत होती है, सो दिया-बाती यानी उजाले की व्यवस्था भी करनी होती है। अब अगर ऐसे काम के समय ही कोई सो रहा हो, तो किसे अच्छा लगेगा? शायद इसीलिए सोने के लिए मना किया जाता है।

इसी तरह किस दिशा में पैर या सिर रखकर सोएं यह भी घर की व्यवस्था की बात है। पर कुछ लोगों का मानना है कि इस धारणा का संबंध पृथ्वी की चुंबकीय रेखा से भी है। तुम जानते हो कि पृथ्वी पर उत्तर-दक्षिण दिशा में एक चुंबकीय बल कार्य करता है। यह बल सोते समय मनुष्य की दिमाग़ी तरंगों पर प्रभाव डालता है। लेकिन ऐसा कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

इन पाठकों ने उत्तर भेजे:-

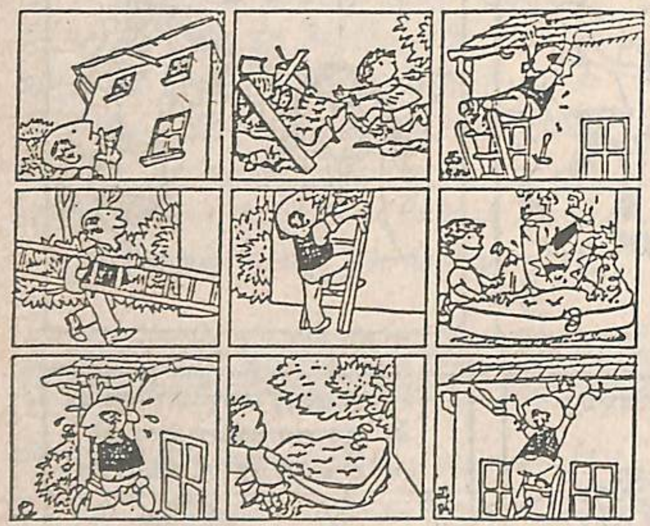
चेतनराम जाट, गोरी का बास, जयपुर। सुगनराम गौड़, पवन कुमारी चौहान, मोतीलाल, उत्तमचंद गौड़, देसूरी, पाली। प्रकाश चंद्र मास, भीलवाड़ा। सोहन शर्मा 'राजू' थबूकड़ा, जोधपुर। **सभी राजस्थान।** मनोज कुमार मिश्र, पूरेनैपाल मिश्र, फ़ैज़ाबाद, **उत्तर प्रदेश।** निर्मल कुमार गोयल, सालिमपुर अहरा, पटना, **बिहार।** चंद्रभूषण श्रीवास्तव, कट्ठीबाड़ा, झाबुआ। सत्येंद्र कुमार मिश्र, शाहपुर, सागर। संजय सिंह, भाटखेड़ी, मंदसौर। राजेंद्र सिंह ठाकुर, कैथोरा, दमोह। देवेन्द्र जैन, आगर मालवा, शाजापुर। राजेश कुमार पाटिल, बोरीद (पाटन), दुर्ग। प्रणोद बोकिल, सोंडवा, झाबुआ। सहदेव प्रसाद नायक, लुहरगुंवा, टीकमगढ़। अपर्णा कनोड़िया, ग्वालियर। मुकेश कुशवाहा, करकटी, शहडोल। कुबेर शरण द्विवेदी, छपड़ौर, शहडोल। विक्रम सिंह राठौर, अमझेरा, धार। **सभी मध्यप्रदेश।**


बिंदु
साहू
यह तितली पकड़कर रखो! मैं धागा लेकर आता हूं।
अरे! तितली कहां गई?
मैंने उसे ऊपर फेंक दिया।
यानि तुमने उसे उड़ा दिया!
चिंता मत करो वह नीचे आ जाएगी।
क्या! वह तुम्हारी पालतू है जो नीचे आ जाएगी!
वह अवश्य आएगी! पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल से कोई बचा नहीं है आज तक!
क्या मतलब!!
मतलब ऊपर फेंकी गई वस्तु को पृथ्वी नीचे खींच लेती है। इसीलिए ऊपर फेंका गया पत्थर नीचे गिर आता है।
तो जब पत्थर नीचे आ सकता है तब तितली क्यों नहीं [redacted] आएगी!



माथापच्ची

(1)



मुन्ने मियां ने एक चित्रकथा बनाई है चकमक के लिए। उन्होंने अपनी छोटी बहन को कहा कि इन्हें क्रम से चिपकाकर चकमक में भेज दो। पर हमें तो मामला कुछ गड़बड़ लगता है। देखो तो चित्र क्रम से हैं या नहीं। या यह बताओ कि आख़िर चित्रकथा की कथा क्या है?

(2)

पैदल भ्रमण पर निकले कुछ व्यक्तियों को सात दिन में 154 किलोमीटर का रास्ता तय करना था। लेकिन हर दिन, पिछले दिन से एक किलोमीटर अधिक चलना था। बताओ वे पहले दिन कितने किलोमीटर चले?

(3)



इन रेखाओं में कुछ लिखा है, क्या लिखा है, पढ़ो तो ज़रा?

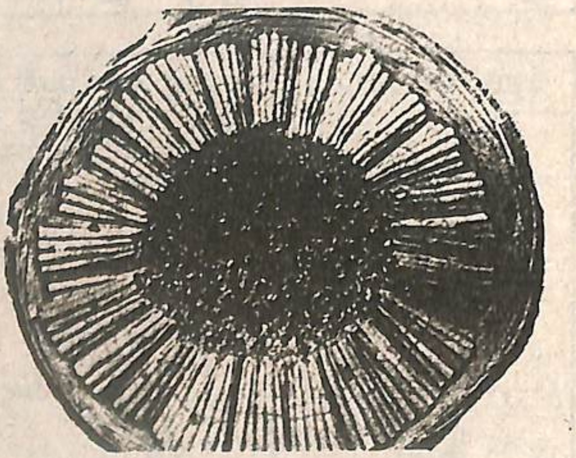
(4)

स्कूल में तिरंगा फहराने के लिए लोहे का एक पतला पाइप ज़मीन में गड़ा था। पाइप की कुल लंबाई बत्तीस फुट थी। एक दिन खेल-खेल में दो लड़के उस पर चढ़ गए। पाइप उनका वज़न नहीं सह पाया और बीच से झुककर ज़मीन से जा लगा। झुका हुआ सिरा ज़मीन पर सोलह फुट की दूरी पर लगा। बताओ पाइप कितने फुट की ऊंचाई से झुका?

(5)

मालती डलिया में बेर लेकर जा रही थी। रास्ते में ठोकर लगने से डलिया गिर गई। डलिया में जो बेर थे उनका तीसरा भाग ज़मीन पर गिरा, पांचवां भाग पास के गढ्डे में चला गया। छटा भाग मालती ने बीन लिया। दसवां भाग डलिया में ही रह गया और छह बेर मालती ने हाथ में झेल लिए। डलिया में बेर कितने थे?

(6)



पहचानो *तो क्या है यह?*

(7)

***लकड़ी** का एक गुटका अलग-अलग दिशाओं से देखने पर कैसा दिखता है, चित्र में देखो-*



अब बताओ वास्तव में गुटके का आकार कैसा है?

(8)

शरबत की एक बोतल की क़ीमत दो रुपए है, जिसमें शरबत तथा बोतल का दाम शामिल है। शरबत पीने के बाद बोतल वापस करने पर, बोतल के दाम वापिस मिल सकते हैं। शरबत की क़ीमत बोतल से एक रुपया ज़्यादा है, तो बोतल की क़ीमत बताओ।

(9)

1	2	3	2	10	12
2	5	12	10	16	13
1	2	1	**क**	10	14

बताओ क की जगह कौन सी संख्या या अंक आएगा?

माथापच्ची उत्तर : दिसंबर, 91 के

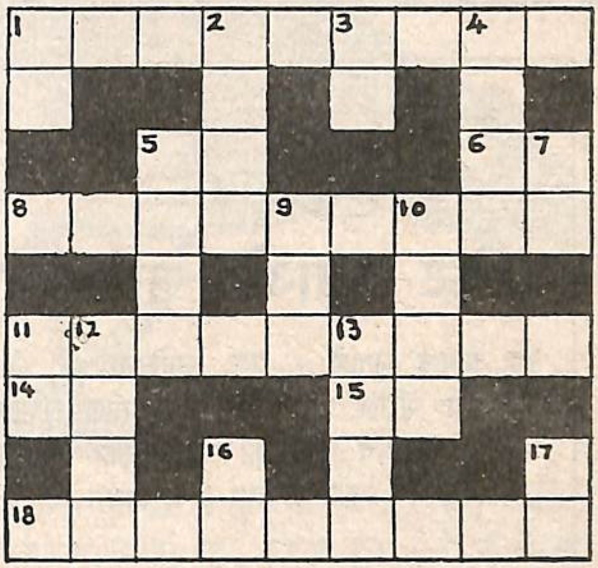
2. सन् 1881
3. द झंडी।
4. संख्या 60 है।
5. 3 मिनट ।
6. ख और घ ।
7.



वर्ग पहेली 8 का हल



वर्ग पहेली-9

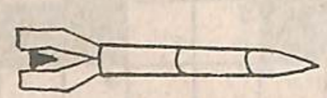


संकेत : बाएं से दाएं

1. आज का काम कल पर मत टालो (2, 2, 1, 2, 2)
5. मां का जाया (2)
6. यक के आगे जोड़ने से आकस्मिक (2)
8. शिष्य बेचारा दुविधा में है। (4,2,3)
11. जान पर बन आने पर सब कुछ करना पड़ता है (3, 2, 1, 3)
14. कहते हैं देह में यह होती है(2)
15. क्या अमीर-क्या ग़रीब! यह तो सबका होता है (2)
18. खोजने-पाने का मुहावरा (2, 2, 2, 3)

संकेत : ऊपर से नीचे

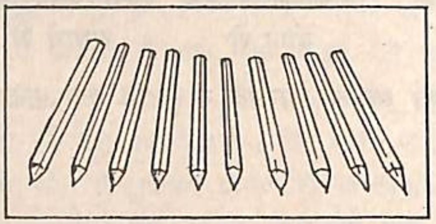
1. शरीर की बनावट (2)
2. कभी-कभी बाज़ार में इसकी बहुत किल्लत होती है (4)
3. गीला भी और ऊंचे दरज़े का (2)
4. सप्तर्षि मंडल का एक तारा (4)
5. मदद (4)
7. तुम्हारी दादी की छोटी बहू तुम्हारी क्या हैं? (2)
9. एक पकवान (3)
10. अच्छी तरह देखना (4)
11. जलरहित पर्वत (2)
12. दयालु (4)
13. सलोना, सुंदर (4)
16. एक मादक पौधा (2)
17. इमली का बीज (2)



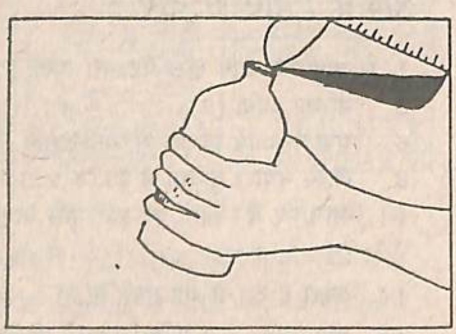
रॉकेट चलाओ, ज़मीन पर

यह सामान जुगाड़ो : एक प्लास्टिक की बोतल, आठ-दस पेंसिल या पेंसिल जैसी गोल लकड़ियां, चार-पांच चम्मच खाने का सोडा, एक नीबू, कार्क या बोतल बंद करने के लिए अन्य साधन ।

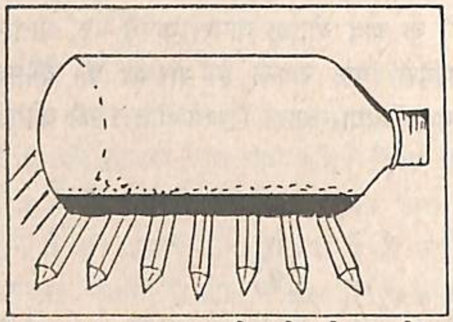
यह प्रयोग घर के बाहर खुले में करो।



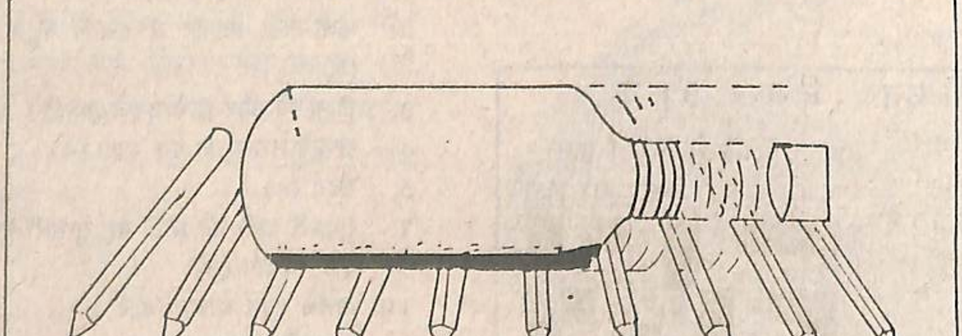
1. पेंसिलों को ज़मीन पर बिछा लो।



2. सोडे को बोतल में डाल दो। अब थोड़े से पानी में चार-पांच बूंद नीबू का रस निचोड़ो।



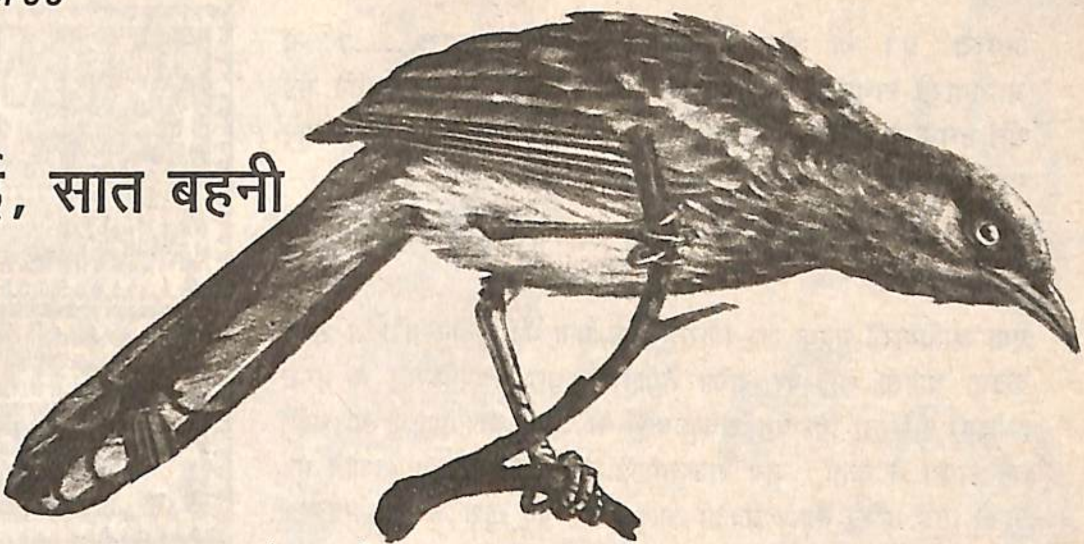
3. अब इस पानी को बोतल में डाल दो और जल्दी से बोतल को बंद कर दो। बोतल को पेंसिल पर रख दो।



4. देखो क्या होता है।

('मराठी विज्ञान पत्रिका' से)

सात भाई, सात बहनी या बातूनी



नाम पढ़कर तुम्हें कुछ अजीब-सा लगा होगा। पक्षी का नाम सात भाई या सात बहनी क्यों? क्या ये सब नर या मादा होते हैं? इस तरह के प्रश्न तुम्हारे मन में उठे होंगे। तो हो जाए इसी पक्षी के बारे में कुछ बातचीत।

इन पक्षियों का सातभाई या सातबहनी नाम इसलिए पड़ा है कि ये प्रायः सात-सात के झुंडों में रहते हैं। किसी झुंड में सात से कम और किसी में अधिक भी हो सकते हैं। हां, यह बात ज़रूर है कि एक झुंड में नर और मादा दोनों होते हैं, लेकिन बाहर से इनमें कोई अंतर नहीं दिखाई पड़ता। इसीलिए सभी को या तो भाई कहा जाता है या फिर बहनी। अंग्रेजी में इस पक्षी के दो नाम हैं **सेवन सिस्टर्स** यांनी **सात बहनें** और **बॅबलर** यानी **बातूनी।**

ये आकार में मैना से कुछ ही छोटे होते हैं। इनका पूरा शरीर मिट्टी के समान मटमैले रंग का होता है। ये जंगल, गांव और शहर सभी जगह पाए जाते हैं। ये पक्षी ऐसे स्थान पसंद करते हैं, जहां घनी झाड़ियां या छोटे घने पेड़ हों। इससे यह फ़ायदा होता है कि बिल्ली, बाज़ या ऐसे अन्य किसी ख़तरनाक जानवर से ख़तरा होते ही ये तुरंत झाड़ियों या घने पत्तों में छुप सकते हैं।

कीड़े, मकड़ियां, बीज और छोटे फल इनका भोजन हैं, जिसे ये ज़मीन पर फुदक-फुदक कर या झाड़ियों के बीच खोजते रहते हैं। ये फूलों का रस भी पीते हैं। इन पक्षियों को हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है। जब इनका झुंड खुले में भोजन ढूंढने के लिए ज़मीन पर उतरता है तब झुंड का एक सदस्य पेड़ पर या अन्य किसी ऊंचे स्थान पर बैठकर निगरानी करता है। जैसे ही कोई ख़तरा दिखाई पड़ता है, वह अपने साथियों को तुरंत चेतावनी दे देता है। ख़तरे के समय सारा का सारा झुंड इकट्ठा होकर तब तक शोर मचाता रहता है जब तक कि हमलावर भाग न जाए। वैसे भी ये आपस में लगातार बतियाते रहते हैं। इनके इस बातूनीपन के कारण ही इन्हें अंग्रेजी में बॅबलर कहते हैं।

इनका प्रजनन काल पूरे साल अनियमित रूप से चलता है यानी प्रजनन का कोई निश्चित समय नहीं होता। नर और मादा मिलकर किसी पेड़ पर आठ से दस फुट की ऊंचाई पर तिनकों से घोंसला बनाते हैं। इसमें मादा तीन से चार हल्के नीले रंग के अंडे देती है। तुम यह जानते हो कि कोयल, कौओं को छकाकर उनके घोंसले में अपने अंडे दे देती है और इन अंडों से निकलने वाले बच्चों का पालन-पोषण कौए ही करते हैं। ठीक इसी प्रकार कोयल परिवार के दो अन्य पक्षी चातक और पपीहा अपने अंडे इन पक्षियों के घोंसले में देते हैं और अंडे सेने तक बच्चों के लिए भोजन जुटाने की ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं।

❑ **अरविंद गुप्ते**

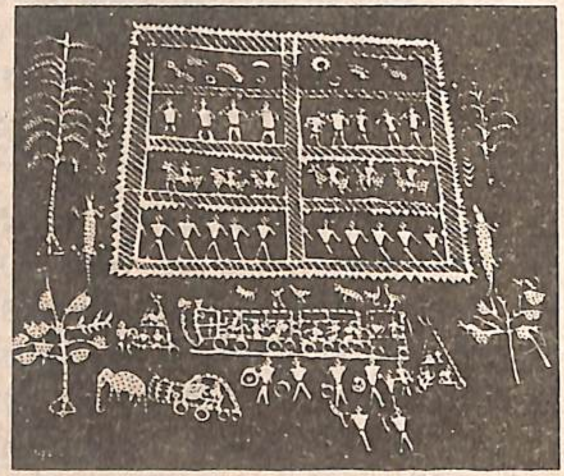
(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी)

चित्रकला के आसपास-9

अगस्त, 91 के अंक में 'चित्रकला के आसपास......7' में आदिवासी समाजों में बनाए जाने वाले चित्रों पर चर्चा की गई थी। हमने ये दो चित्र भी छापे थे और पूछा था कि वे क्यों बनाए गए होंगे? क्या कहानी रही होगी उनके पीछे?

हमें एक कहानी प्राप्त हुई है, जिसे यहां प्रकाशित कर रहे हैं।





एक आदिवासी युवक था, किसनू। वह गांव की राजकुमारी से शादी करना चाहता था, पर राजा तैयार न था। तब किसनू ने भगत (ओझा) से पूछा कि वह राजकुमारी से शादी कर पाएगा या नहीं। तब भगत ने कहा, "तुम राजकुमारी से शादी तो कर पाओगे पर पहले तुम्हें अपने ऊपर प्रकोप डाले देवता को ख़ुश करना होगा।"

किसनू ने पूछा, "देवता ख़ुश कैसे होगा?"

तब भगत ने कहा, "तुम्हें तुम्हारी शादी का चित्र बनाना होगा कि तुम अपनी शादी कैसे करोगे?"

तब किसनू ने अपने घर की दीवार पर चित्र बनाना शुरू किया। उसने पहले बंदूकधारी, घोड़े पर सवार, पैदल सिपाही बनाए। फिर एक रेलगाड़ी बनाई, जिसमें बाराती बैठे थे। फिर हाथीगाड़ी बनाई जिसमें किसनू बैठा था। फिर पालकी बनाई जिसमें राजकुमारी बैठी थी। उसने पेड़ों पर मधुमक्खी के छत्ते खाते हुए बंदर बनाए। जानवर भी बनाए। कुछ बाजे-गाजे वाले भी बनाए।

इस तरह देवता ख़ुश हुए और राजा मान गया। किसनू की शादी राजकुमारी से उसी ठाट-बाट से हुई, जिस तरह चित्र में बताया गया है।

❑ आशीष दलाल, चौदह वर्ष, खरगोन

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016

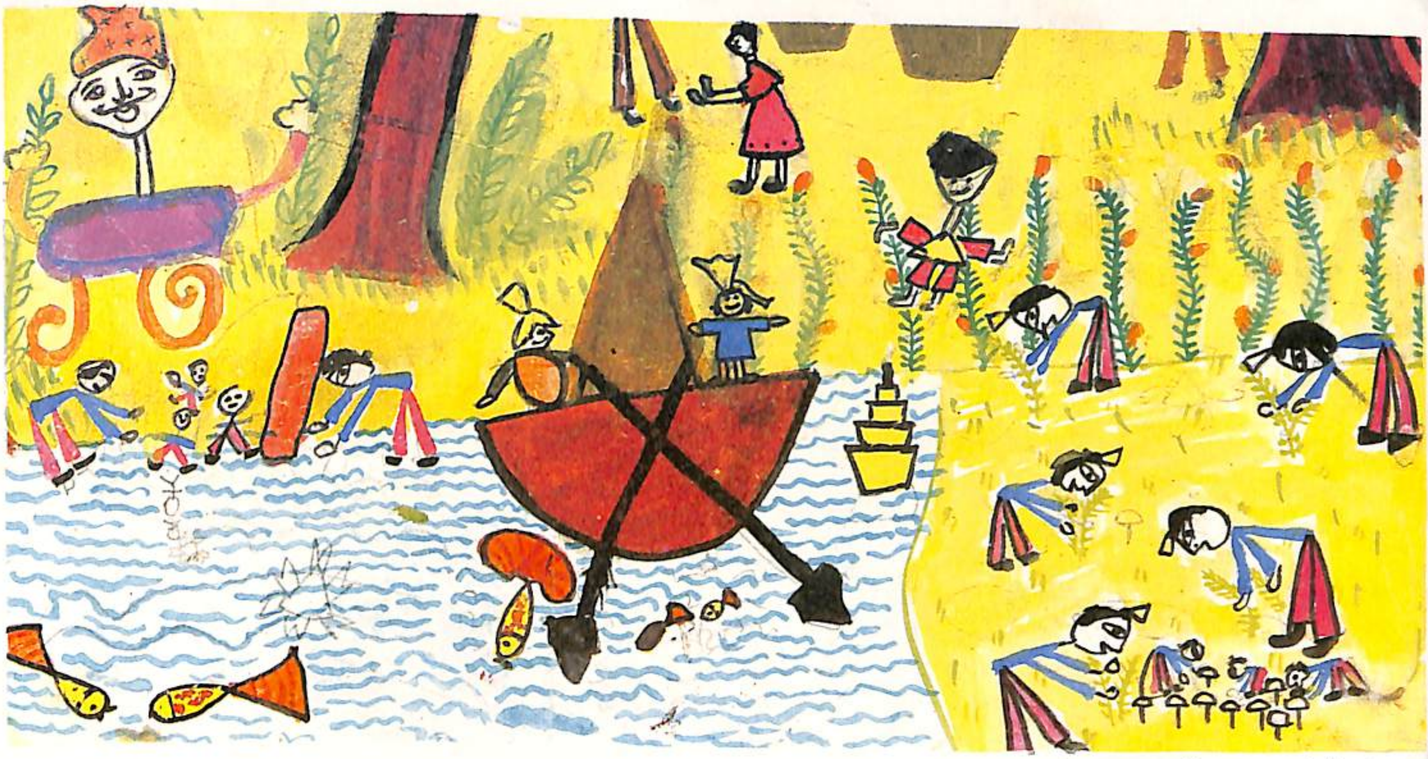
संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016

उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी रोजारियो, एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी भोपाल -462016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जनवरी, 1992

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)



सिद्धार्थ अग्रवाल, चौथी, भोपाल



श्रुतिप्रिया, तीसरी, पटियाला

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/92



नीलेश राजावत, सातवीं,
बांकीमोगरा, बिलासपुर

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित संपादक : विनोद रायना